ALL INDIA INDIAN MEDICINE GRADUATES ASSOCIATION

SOUVENIR
ON
RASAYAN AUR AYURVED

LORD DHANWANTRI DAY
SUNDAY, THE 3RD NOVEMBER 1991

Scanned by CamScanner

Himalaya's Daily Health Supplement Highlights

You know the curative values of Abana, Liv.52, Septilin, Cystone, Geriforte and Mentat. You also know that they are totally safe. Now consider these remedies for their value as daily health supplements. Choose 2 or 3 or all. They provide:

1. *Daily protection of your patient's heart and liver (Abana, Liv.52)*
2. *Daily protection from common infections (Septilin)*
3. *Prevention of repeated urinary infections or stones (Cystone)*
4. *Fitness of body and mind daily (Geriforte)*
5. *Channelized, purposeful mental function every day (Mentat)*

	The Benefits	The Dosage
Abana® (tablets)	Abana is a cardiac tonic that protects the heart, guards against circulatory problems and wards off the fears and anxieties that often lead to cardiac neurosis.	1 tablet twice a day
Liv.52® (drops, syrup, tablets)	Liv.52 keeps the liver functioning at its optimum with obvious health benefits. Liv.52 acts as a "detox", to protect against all kinds of toxins that come from food (pesticides, adulteration), water or the air (exhaust fumes, industrial toxins etc.).	2 tablets twice a day
Septilin® (syrup, tablets)	Children regularly pick up colds and other minor infections at school. Similarly, adults pick up these infections from their children, at work or in crowded places. Septilin builds up the body's own defence mechanism through improved phagocytosis and so protects both adults and children against day-to-day infections.	2 tablets twice a day
Cystone® (tablets)	Cystone keeps the kidneys and the urinary tract flushed and working at optimum efficiency. Cystone is specially valuable in subjects prone to repeated urinary infections or stone formation.	2 tablets twice a day
Geriforte® (syrup, tablets)	Geriforte provides comprehensive health care as it tones up all the systems and organs of the body. People feel physically fitter and they can face life's daily stresses calmly. Additionally, Geriforte provides vitamins and minerals in their natural form.	1 tablet twice a day
Mentat* (syrup, tablets)	Mentat activates the mind and improves mental alertness, concentration and memory. Mentat overcomes mental fatigue, liberates the individual from social isolation, channelizes mental energy in purposeful activities, instils confidence and prevents undue anxiety or depression. In students, Mentat improves learning ability and academic performance.	2 tablets twice a day

HEALTH CARE DERIVED FROM THE BEST OF NATURE SINCE 1930
THE HIMALAYA DRUG CO.
MAKALI, BANGALORE 562 123 (INDIA)

Scanned by CamScanner

भगवान धन्वन्तरि

Scanned by CamScanner

धन्वन्तरि पूजनम्

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरण भूषितम्
दधानममृतस्यैव कमण्डलु-प्रभायुतं ।
यज्ञ भाग भुजं देवं सुरासुर नमस्कृतम् ।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बर धरं शुभं ॥
धर्म कंद समुद्भूतं ज्ञाननाल सुशोभितम् ।
अष्टैश्वर्य युतं ध्याये प्रभुं धन्वन्तरिंमदा ॥

Scanned by CamScanner

Governor Uttar Pradesh

RAJ BHAVAN
LUCKNOW

October 21, 1991

Message

I am glad to know that All India Indian Medicine Graduates Association of Shakarpur, Delhi is going to celebrate "Bhagwan Dhanwantri Day" on 3rd November, 1991 at IMA Hall, near ITO, New Delhi. On this occasion a special issue of AIIMGA Journal will be brought out.

It is said that a country is strong only if its citizens are healthy, It is, therefore, necessary to create awareness among the people by organising such a celebration. The people attending this celebration will realise the importance of their health and sanitation and will also take interest in Rasayan and Ayurved medicine system. They will be able to have excellent scientific feast through this function. I hope the journal will contain valauable and knowledgeable articles on modern research and physical education of this system.

I wish for the success of the celebration and publication of the Journal.

Sd/-

B. Satyanarayan Reddy

Scanned by CamScanner

ADDL. DISTRICT & SESSIONS JUDGE
DELHI

Date 28th October, 1991

Dear Dr. Bhargava,

Kindly accept my congratulations for organising the celebrations for "Bhagwan Dhanwantri Day" on 3-11-1991. Medical profession as a whole Is a noble profession but the medicos practising in Indian medicine deserve better honours as they are up-holding the age old heritage of Indian medicine which in the times to come may prove to be the best in the world. I am sure that all members of your association will re-dedicate themselves to the service of man-kind.

With regards

Sd/-
R. C. Chopra
Addl. Distt. & Sessions Judge
Delhi.

Dr. Sanjiv Bhargava
Secretary of Indian
medicine graduates
Association.

Scanned by CamScanner

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद
एस-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन मार्किट, नई लिल्ली-110016

डा. विवेकानंद पाण्डेय
एम. बी. एम. एम. डी. एवाई. एम. पी. एच. डी. (आयु.)
निदेशक

दिनांक 11-10-91

शुभ-कामनाएँ

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि भारतीय चिकित्सा पद्धति के स्नातकों के अखिलभारतीय संगठन के माध्यम से दिनांक 3-11-91 को नई दिल्ली में "भगवान धन्वन्तरि दिवस" मनाने का विशाल आयोजन किया जा रहा है। औषधि के देवता के इस पावन जन्मोत्सव पर दूर-दूर से आये विद्वान चिकित्सक एवं प्रतिष्ठित नागरिक इस उत्सव के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षण एवं रोगनिवारण की नई प्रेरणाएं तथा नई दिशाएं उपलब्ध कर सकेंगे।

आज विश्व की परिस्थितियों में तेजी से परिवर्तन होता जा रहा है। समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप विज्ञान को उनकी पूर्ति के लिए वही सरल तरीके अपनाने पड़ते हैं जो उनके लिए सरल एवं शीघ्र प्रभावी हो सके। इसी सामयिक अपेक्षा के अनुरूप आयुर्वेद के चिकित्सकों को भी अपने विज्ञान की श्रीवृद्धि हेतु अनवरत प्रयास करना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं, स्नातकोत्तर शोध विभागों तथा अनुसंधान केन्द्रों तक ही आयुर्वेद की प्रगति का भार सीमित न रहे तथा शासकीय सहयोग एवं आर्थिक अपर्याप्तता मार्ग में बाधक होते हुए भी हमारे कदम पीछे न हटें, हमारा उत्साह गिर न पाये और हम अपने पूरे मनोयोग एवं सच्ची निष्ठा से इस मानव सेवा के व्रत को सहज स्वीकार करें। इसके लिए हमें त्याग करना पड़ेगा। इस उपलब्धि के लिए धनलिप्सा, आराम एवं साधन जुटाने की होड़ को छोड़कर अपना सभी सुख त्यागकर एक तपस्वी एवं कर्मयोगी की भांति हम अपनी प्रतिभाओं के विकास में जिस दिन जुट जाएंगे, उसी दिन से हमें परमुखापेक्षी रहने की बात स्वतः पीड़ा पहुँचायेगी।

अतः आयुर्वेद के युवा चिकित्सकों से यही मेरा हार्दिक संदेश है कि वे आगे आयें तथा आपसी परामर्श से एक-एक महत्वपूर्ण कार्य को लेकर उसकी साधना में जुट जायें। निकट भविष्य में उनके लिए एक नया स्वर्णिम विहान के रूप में प्रकट होगा। अकर्मण्यता, दीनता तथा अज्ञानता को दूर करके तपस्वी की तरह आगे बढ़ते जाना है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह प्रेरणा अवश्य चमत्कारिक परिवर्तन लायेगी और वही भगवान धन्वन्तरि के लिए सच्ची श्रद्धासुमन बन जायेगी।

भगवान धन्वन्तरि जन्मोत्सव तथा तदुपलक्ष में प्रकाशित विशेषांक की भरपूर सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभ-कामनाएं हैं।

हस्ता./-
(डा. विवेकानन्द पाण्डेय)

Scanned by CamScanner

UNIVERSITY OF DELHI
दिल्ली विश्वविद्यालय
Professor Upendra Baxi
Vice-Chancellor

No. VC/91/2271

October 29, 1991

Dear Dr. Bhargava,

Thank you for your letter No. AIIMGA/DDC/SB/033/91 dated 8/10/91. I am glad to learn that the All India Indian Medicine Graduates Association will be celebrating Bhagwan Dhanwantri Day on 3rd November, 1991, and that on this occasion you propose to bring out a special issue of AIIMGA Journal. May I compliment you on this splendid initiative and wish you all success.

With kind regards,

Yours sincerely,
Sd/-
UPENDRA BAXI

Dr. Sanjeev Bhargava
Secretary
All India Indian Medicine
Graduates Association (Regd.)
77, Basant Village
New Delhi-110 057

Scanned by CamScanner

सोमदत्त शास्त्री
सारन
फरीदाबाद
28-10-91

संमति सन्देश

आल इण्डिया इण्डियन मैडीसन ग्रेजूएट एसोसिएशन
हरि स्मरणम्

यह जान कर अत्यन्त हर्ष का प्रादुर्भाव हुआ है कि आप रसायन व आयुर्वेद पर स्मारिका निकालने जा रहे हैं, जिस से मानव का निकट का सम्बन्ध है (शरीर माधं खलु धर्म साधनम्) आपका उद्देश्य तथा उद्यम सराहनीय है, ईश्वर का नियम है कि सहायमन्नस्यनिजः प्रकर्षः, हमें पूर्ण आशा है, आप सफल होंगे तथा ईश्वर आप को पूर्ण साहस दे, आगे भी इसी प्रकार आपके संस्थान से उपकार होता रहे।

हस्ता.
ब्रह्मर्षि सोमदत्त शास्त्री
सारन
फरीदाबाद

Scanned by CamScanner

आचार्य राजकुमार जन
एम. ए., एच. पी. ए.
दर्शनायुर्वेदाचार्य

दूरभाष: 528612 कार्या
7117612 निवास
भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्
1 ई/6, स्वामी रामतीर्थ नगर,
नई दिल्ली-110055

दिनांक 31-10-1991

प्रिय महोदय,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आपकी संस्था के द्वारा धन्वन्तरि जयन्ती का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति के स्नातकों के कंधों पर पीड़ित समाज की सेवा एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का गुरुतर भार है वे अपनी सेवा एवं सक्रिय योगदान से समाज का जो उपकार कर रहे हैं वह सराहनीय है। आपकी संस्था अपनी विभिन्न गति विधियों एवं क्रिया कलापों से चिकित्सकों एवं भारतीय चिकित्सा के स्नातकों को संगठित कर उन्हें प्रोत्साहन एवं प्रेरणा दे रही हैं वह भी स्तुत्य है।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और भगवान धन्वन्तरि जयन्ती के पावन अवसर पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

भवदीय,

हस्ता.

राजकुमार जैन

Scanned by CamScanner

सन्देश

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि A.I.I.M.G.A. एशोशियेसन हर साल की तरह इस साल भी 'भगवान धनन्वन्तरी दिवस' मना रहे हैं। और इस पावन अवसर पर 'रसायन और आयुर्वेद' विषय पर स्मारिका निकाल रहें हैं।

मै भगवान से प्रार्थना करता हुं कि आप लोग इसी प्रकार आगे बढ़ते जाएँ और समाज की बेहतरीन सेवा करते रहें।

भवदीय

परविन्दर शारदा

उप-सम्पादक पंजाब केसरी

Scanned by CamScanner

EDITORIAL BOARD

Dr. H. S. D. SHARMA
Chief-Editor

Dr. C. S. BHARDWAJ
Editor

Dr. S. C. AGGARWAL
Editor

Dr. (Mrs.) Anuradha Bhargava
Sub-Editor

Dr. N. K. DHAMIJA
Sub-Editor

Dr. ABDUL HASEB
Sub-Editor

Scanned by CamScanner

AIIMGA-CABINET

1991 - 93

President :

Dr. R. S. CHAUHAN
C-2210230
R-2247601

Vice-President :

Dr. S. K. SHARMA
R-2208220

Dr. C. B. PARASAR
C-82-77522

Gen. Secretary :

Dr. D. D. SEMWAL
Kanchan X-Ray Nursing Home
Nongloi Delhi-110041
C-5471884,
5471025
R-5471630

Secretary :

Dr. J. M. NASIR
C-7231080

Dr. SANJEEV BHARGAVA
C-6875948
R-6875394

Secretary Immunigation Programme :

Dr. S. P. PANDEY
C-7225728
R-7112289

Secretary Family Welfare Programme :

Dr. MUNISH GULATI
C-7223395

Secretary Press :

Dr. VIJAY JINDAL
R-7222553

Office Secretary

Dr. ABDUL HASEEB
C-2252911

Cashier :

Dr. J. S. PANWAR
C-5701831

Dep. Cashier :

Dr. SANTOSH SHARMA

Scanned by CamScanner

Sitting L to R Dr. J.M. Nasir, Dr. Abdul Haseeb, Dr. Santosh Sharma, Dr. S.K. Sharma, Dr. R.S. Chauhan, Dr. D.D. Semwal, Dr. C.B. Parashar.

Standing Left to Right Dr. S.P. Pandey, Dr. V.K. Jindal, Dr. Sanjeev Bhargava, Dr. Munish Gulati, Dr. J.S. Panwar

Scanned by CamScanner

Chief Guest Sh. Chander Shek
Sh. Kalyan Singh Kalvi
Minister Sh. Dasai Chaudhar
Health Minister, Dr. R.S.
President of AIIMGA & Dr T
President AIIMGA (Haryana) on
Seminar at Bhondsi 31-3-199

Releasing the Souvenir of AIIMGA by Prime Minister of India Sh. Chander Shekhar on 31-3-1991

Speech on 1st Seminar on Prevention of Heart Disease By Hon'ble Prime Minister Sh. Chander Shekhar on 31-3-1991 at Bhondsi

Scanned by CamScanner

Executive Members 1991-1993

S. No.	NAME	AREA	Tele Phone
1.	Dr. Mahesh Parsad Chaturvedi	M. P.	
2.	Dr. Babu Ram Gautam	Himachal Pradesh	
3.	Dr. Ram Kishan	Karnatak	
4.	Dr. Rajvir Rana	U. P.	
5.	Dr. Hari Shanker Dev Sharma	Haryana	
6.	Dr. Harish Sood	Delhi Cantt.	3293026
7.	Dr. Ashok Bajaj	Vishnu Garden	5442642
8.	Dr. Rishi Pal Panwar	Shahbad Daulatpur	
9.	Dr. Pawan Kumar Sharma	Mangol Puri	R. 7223502 C. 7273548
10.	Dr. S. K. Mangala	Tilak Nagar	5439393
11.	Dr. I. P. Singh	Naveen Shahdra	2292380
12.	Dr. Akhilesh Sharma	Mandawali	2211942
13.	Dr. Arvind Gupta	Kalka Ji	R. 6416490 C. 6469875
14.	Dr. S. C. Paliwal	Mangol Puri	
15.	Dr. Mohd. Usman	Mangol Puri	

Scanned by CamScanner

S. No.	NAME	AREA	Tele Phone
16.	Dr. B. D. Joshi	Dakshin Puri	R. 6452278 C. 6468606
17.	Dr. R. K. Goel	Mangol Puri	R. 7275719 C. 7273469
18.	Dr. (Mrs.) Anjana Rastogi	Daryaganj	3265441
19.	Dr. S. C. Aggarwal	Kashmirigate	R. 2911588 C. 2523363
20.	Dr. Sudhir Sharma	Shahdara	R. 5709173 C. 2200525
21.	Dr. R. P. Panchal	Shakurpur	R. 7225064 C. 7186838
22.	Dr. Rajinder Chabra	Shalimar	R. 7275719 C. 7273464
23.	Dr. Kuldeep Sharma	Laxmi Nagar	2206831
24.	Dr. Kuldeep Singh Sohal	Krishna Nagar	R. 2246917 C. 2241513
25.	Dr. Y. K. Sharma	Yamuna Vihar	
26.	Dr. Rajeev Lochan	Rohtash Nagar	2293518
27.	Dr. N. K. Dhamija	Vishwas Nagar	2211789
28.	Dr. O. P. Sharma	Ghonda	2282644
29.	Dr. Fariyad Ali Chaudhary	Laxmi Nagar	2248386
30.	Dr. D. R. Dixit	Aram Park	2245069
31.	Dr. Sunil Garg	Ghaziabad Border	863984
32.	Dr. Navneet Arora	Model Town	7111333
33.	Dr, Ashok Pandey	Nangal Rai Sagarpur	591034

Scanned by CamScanner

1st AIIMGA Cabinet 1987-1989

President	:	Dr. O. P. VASISTH
Vice President	:	Dr. S. K. SHARMA
Gen. Secretary	:	Dr. J. S. PANWAR
Secretary	:	Dr. J. M. NASIR
Cashier	:	Dr. S, C. PALIWAL

2nd AIIMGA Cabinet 1989-1991

President	:	Dr. R. S. CHAUHAN
Vice President	:	Dr. S. K. SHARMA
		Dr. C. B. PARASHAR
Gen. Secretary	:	Dr. D. D. SEMWAL
Secretary	:	Dr. J. M. NASIR
Jt. Secretary	:	Dr. SANJEEV BHARGAWA
Cashier	:	Dr. J. S. PANWAR
Dep. Cashier	:	Dr. SANTOSH SHARMA
Propganda Secretary	:	Dr. MUNISH GULATI

Scanned by CamScanner

DHANWANTRI AWARDS OF AIIMGA

FOR

YEAR 1990 - 1991

1. **Dr. Sanjeev Bhargava**
   A dedicated worker of Associaton
2. **Dr. Santosh Sharma**
   Giving full co-operation for AIIMGA funds
3. **Dr. Pawan Sharma**
   Well known worker in the field of AIIMGA
4. **Dr. Suresh Chand Aggarwal**
   Who Stands for AIIMGA
5. **Dr. N. K. Dhamija**
   Well Known Homoeopoth who solves the problems of Homeopaths in the field
6. **Dr. T. C. Goel**
   who has worked a lot in Haryana for the organization
7. **Dr. C. S. Bhardwas**
   working with interest for AIIMGA Journal
8. **Dr. Zameel Ahmed**
   Dean Hamdard University
9. **Aimil Pharma**
   who co-operates the organization at every step
10. **Dr. A. Khaliqe**
    well known urologist who give full co-operation to the organisation
11. **Dr. R. K. Jain**
    Registrar CCIM, N. Delhi who stands for Association at all time
12. **Dr. P. C. Goel**
    Ex-Deputy Director Directorate of Family Welfare who helped at every step to trained the members for Immunization

Dhanwantri Awards of AIIMGA

FOR

YEAR 1989–1990

1. Dr. O. P. VASISTH
2. Dr. H. S. D. SHARMA
3. Dr M. S. BHATTI
4. Dr. J. M. NASIR
5. Dr. S. P. PANDEY
6. Dr. C. B. PARASHAR
7. Dr. Veena JINDAL
8. Dr. Vijay Swaroop
9. Dr. S. K. SHARMA
   Dep. Advisor Ministry of Health Govt. of India
10. Dr. P. CHAKARWARTI
    Advocate Supreme Court
11. Sh. Parminder Sharda
    Sub. Editor Punjab Kesari
12. Dr. S. C. PALIWAL
    (1988-1990)

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरद : शतँ प्रब्रवाम शरद : शतमदीनाः स्याम शरदः शतँ भूयश्चः शरदः शतात् ॥

(यजु. अ. 36 मं. 24)

देवता आदि सम्पूर्ण जगत् का हित करने वाले और सबके नेत्ररूप व तेजोमय भगवान् सूर्य पूर्व दिशा से उदित हो रहे हैं। (उनके प्रसाद से) हम सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक हम में बोलने की शक्ति रहे तथा सौ वर्षों तक हम कभी दीन-दशा को न प्राप्त हों। इतना ही नहीं; सौ वर्षों से अधिक काल तक भी हम देखें, जीवें, सुनें, बोलें एवं कभी दीन न हों।

संसार का प्रत्येक चेतन जीव अपना सारा जीवन मैं (स्व) की रक्षा हेतु अनजाने में ही समाप्त कर लेता है। इस "मैं" में शरीर, मन, आत्मा और इन्द्रियां तथा इन सभी के विषय होते हैं। इन सभी को बचाने हेतु जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन यात्रा करता है। इस जीवन यात्रा को श्रेष्ठतम बनाने हेतु ही इस संसार में क्रिया-प्रक्रिया करता रहता है।

जीवन एक पर्वतारोहण के समान है और पर्वत के शिखर पर पहुंच कर आनन्द की प्राप्ति होती है। किन्तु सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के लिए मनुष्य में सुदृढ़ मन, सत्य वचन व शारीरिक शक्ति का होना अति आवश्यक है और यह सब कुछ तभी सम्भव है, जब मनुष्य सत्कर्म करते हुए स्वस्थ व सुन्दर जीवन जीता हो। इस संसार में मनुष्य वेदोक्त कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा पूरी कर सकता है।

प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसकी आंखों में दर्शनशक्ति हो। नाक में घ्राण शक्ति हो श्रवण और वाचा शक्ति प्रबल हों, बाल काले हों, भुजाओं में बल और उरुओं में शक्ति हो, जांघों में वेग व पैरों में दृढ़ स्थिर शक्ति हो--अर्थात् शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग त्रुटिरहित, निरोग, स्वस्थ और सबल हों। मनुष्य की यह इच्छा न तो ग़लत है न असम्भव। हां, इसके लिए संयम-नियम की आवश्यकता है।

यदि शरीर स्वस्थ है, इन्द्रियां निरोग और शक्तिशाली हैं, तभी इस संसार रूपी सागर को पार किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

कौन नही चाहता कि मृत्यु उससे दूर भाग जाए और उसे दीर्घजीवन की प्राप्ति हो। खासकर जब मनुष्य रोग से पीड़ित होता है तब उसे मृत्यु का भय अधिक सताता है । किन्तु भय रोग को दूर नहीं करता बल्कि और बढ़ाता है। अतः भय को दूर भगाकर, सजग रहकर तथा नियमों का पालन करते हुए नीरोगी रह सकते हैं ।

हमारी तो यह कामना और प्रयास है कि—'मा पुरा जरसो मृथाः' कोई भी बुढ़ापे से पूर्व न मरे। जिस प्रकार असत्य भाषण व चोरी करना पाप है उसी प्रकार बुढ़ापे से पूर्व मरना भी पाप है ।

इस पाप से विमुक्ति हेतु एवं मनुष्य शरीर के जीवन के उद्देश्य पूर्ति के लिए शरीर को सौ साल आयु प्रदान हेतु आयुर्वेद का उद्भव हुआ ।

"धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यं मूल मुतमम्"

अर्थात् धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन पुरुषार्थों की प्राप्ति का उत्तम मूल आरोग्य में निहित है ।

सर्वमन्यत्पदित्यज्य शरीर मनुपालयेत ।
तद् भावेहि भावना सर्वाभाव शरीरिणाम् ।।

यह देश के भूतपूर्व रासायनिक वैज्ञानिको, सिद्ध योगियों और महात्माओं के श्रेष्ठतम कर्माभ्यास के फलस्वरूप अपनी भावी पीढ़ी की सन्तानों की सुख-सुविधा और समृद्धि के लिये परम्परा से प्राप्त एक अनुपम देन है, जिसे हम पूर्ण रूप से विस्मृत कर चुके थे एवं जिसके आकर्षक अनन्त गुण-लाभों से बहुत काल से वंचित थे ।

आज जब विश्व के आकाश पर दौर्दैन्यता के बादल मंडरा रहे हैं, और तमाम दुनियावी संकटों का सामना है हमारा दिन प्रतिदिन ह्रास हों रहा है। भौतिक वाद में फंसकर तकनीकी के बढ़ जाने से पर्यावरण दूषित हो गया है। मानव सभ्यता तनाव के कारण मौत के कगार पर आ खड़ी हुयी है, चारों ओर से मन-मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड़ रहा है, प्राकृतिक प्रकोपों से एक ओर तो रोगों में वृद्धि हो रही है, दूसरी ओर युद्ध की भीषण मीमांसाओं से मनुष्य खतरे में आकर अपने ही हाथों अपने अस्तित्व को मिटा देने को तैयार है। ऐसी बीहड़ स्थिति में सब चिकित्सकों, वैज्ञानिकों और जानकारों का कर्तव्य हो जाता है कि कोई ऐसी खोज निकाल लें जो रोग, बुढ़ापा और मौत से बचाव रख सके ।

हमारी ये रासायनिक शक्तियां जीवनी उर्जा प्राचीन काल से ही लोगों को ज्ञात थी। इन शक्तियों का सृजन एवं इन औषधियों के रचनात्मक कार्य का ज्ञान कुछ आज का नहीं है । शास्त्रों के गहन अध्ययन से प्रतीत तो ऐसा होता है कि बहुत प्राचीन काल में ही इनका प्रयोग बहुतायत से किया जाता था, जीवन मृत्यु, बुढ़ापा और रोग की समस्यायें सब कुछ आज ही नहीं, यह सृष्टि के

Scanned by CamScanner

आदिकाल से ही सम्बन्धित है जीवन धारण कर कौन सुखपूर्वक जीना नहीं चाहता, मौत से किसे भय नहीं है और स्वयं मरने की इच्छा किसको। एक दरिद्र भी जो अत्यन्त कष्ट से जीविकोपार्जन करता है वह भी तो नहीं चाहता हमारा अन्त हो। बहुत बूढ़ा जिसका कोई आश्रय नहीं, जिसकी सर्व इन्द्रियां निर्बल हो गई हैं, यहां तक की जिसकी दृष्टि श्रवण-शक्ति आदि सर्वथा लोप हो गयी है, वह भी नहीं चाहता कि मेरा अन्त हो। वृद्धता किसे प्यारी है, जरापन कौन पसन्द करेगा कि हम रोग मुक्त न हो। निरोग होकर जीवित रहना किसे पसन्द नहीं यह जानते हुए कि इस संसार में निरोग शरीर ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों साधनों का प्रतीक है, रोगी बने रहना किसे अच्छा लगेगा। किन्तु फिर भी मौत आती है, रोग से लोग कराह उठते हैं और बुढ़ापा आ टपकता है कितनी विवशता है।

रोग, बुढ़ापा और मौत इन तीनों की चिन्ता पूर्व काल में थी और आज भी ज्यों की त्यों बनी हुयी है। देवता, दानव दोनों ने मिल कर प्रयास किया था कि हम सब अजर-अमर हो जांय, समुद्र-मन्थन के पीछे यही तो रहस्य था अमृत प्राप्त करने के लिए कितनी कठिनाई उपस्थित हुयी थी। सुना जाता है कि जिस काल में सागर मन्थन किया जाने वाला था, उस समुद्र में सारे संसार की बहुत सारी जड़ी-बूटियां, वनस्पतियां और औषधियां उसमें मन्थन के पूर्व ही डाल दी गयी थी। उन्हीं वनस्पतियों से निर्मित सार रूप अमृत को देवता लोग खा-पीकर अजर-अमर हो गये थे, भगवान् धन्वन्तरी स्वयं अपने हाथ में अमृत भरे हुए कलश को लेकर प्रकट हुए थे। इन सब बातों से अमृत के स्वरूप का कुछ-कुछ ज्ञान होता है। कलश में रहने से वह तरल था और चुअने वाला एक द्रव था और था संसार की उत्तमोत्तम वनस्पतियों का सार।

यह बात भी प्रसिद्ध है कि पूर्वकाल में देवता और नाग जाति के लोग रस और रसेन्द्र मना के पारे (मरकरी) को खापीकर जरा, रोग और मृत्यु रहित होकर अजर-अमर सुन्दर शरीर वाले हो गये थे।

इन तथ्यों को पढ़कर कुछ काल्पनिक सा प्रतीत होता है। लेकिन इस प्रकार के तथ्य हमें खोज का मार्ग प्रशस्त करते हैं ये प्रेरित करते हैं कि इस प्रकार की किसी औषध का अस्तित्व बन सकता है कि मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त होकर अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आज हमारे अन्दर आत्मविश्वास की कमी है। हमें अपने ऋषियों की खोज भी संदिग्ध लगती है। उन पर भी पूर्णरूपेण विश्वास नहीं है। जब कि विदेशी विद्वान आयुर्वेद में पूर्ण आस्था रखते हुए कहते हैं कि :—

Ayurveda, the science of long life, is one of the oldest systems of medicine known. It is holistic, treating the individual as a complex whole in relation to the environment.

The treatment uses natural remedies, making use of the power of nature to restore a state of balance. The heat of the sun, light, air and water, together with mineral, vegetable and animal substances, are applied by therapy. The restoration and

Scanned by CamScanner

maintenance of health are achieved by nourishment, diet, and the use of medicinal herbs. Health education and Preservation, alongwitn practices such as meditation and Yoga, Play an important part in identifying an invigorating and fulfilled life.

Ayurvedic medicine in all its aspects shows how this ancient holistic healing system can be used to promote health and well being.

ये उपरोक्त वाक्य जर्मन के एक विद्वान Birgit Heyn (ब्रेहट हेयन) ने कहे जो कि काफी लम्बे अर्से तक भारत में रह कर भारतीय जड़ी बूटियों से स्वास्थ्य के ऊपर खोज करते रहें। ये वाक्य पूर्ण आस्था से कहे गये हैं। और अपने लम्बे जीवन की खोज से उपलब्ध हुए प्रतीत होते है।

हमारे आर्ष ग्रथों ने "रसायन क्रिया" में मनुष्य को रोगदोष से मुक्त कराने एवं सौ साल तक सभी इन्द्रियों को शक्ति से पूर्ण रखने की विधि बतलाई है। जो कि दो प्रकार की हैं,—

1. कुटीप्रावेषिका Management in Indoor-Patient Department
2. वातातपिक Management in out-Patient Department

इन दोनों प्रयोगविधियों में कुटीप्रावेपिका विधि मुख्य होती हैं।

"निवर्ति निर्मये हर्म्ये प्राप्योपकरने पुरे। दिश्युदीच्यां शुभे देशे त्रिगर्भा सूक्ष्मलोचनाम्। धूमातपरजोव्यालस्त्रीमूर्खाद्यविलङ्घिताम्। सज्जवैद्योपकरणं सुमृष्टां कारयेत्कुटीम्॥"

जिस स्थान पर पुण्य करने वाले, राजा, वैद्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और साधु जन निवास करते हों। जो स्थान भयरहित और उत्तम हों, जिस स्थान पर सभी आवश्यक सामग्रियां सुविधा से मिल सकती हों ऐसे नगर की उत्तर-पूर्व दिशा की उत्तम भूमि में कुटी का निर्माण करावें। जिस कुटी का विस्तार (चौड़ाई), उत्सेध (ऊँचाई) और लम्बाई पर्याप्त हो और जो कुटी त्रिगर्भा हो अर्थात् एक गृह के अन्दर दूसर गृह, दूसरे गृह के अन्दर तीसरा गृह हो जिसमें छोटे-छोटे झरोखे हों; कुटी की दीवार मोटी हो और जो कुटी प्रत्येक ऋतु में सुखकर हो। आवश्यकतानुसार प्रत्येक कार्य करने के लिए पृथक-पृथक स्थान बनाए गए हों। मन के लिए सुखकर हों, और उस कुटी में अप्रिय एवं अनुचित शब्द का प्रवेश न होता हो। स्त्री जन उसमें विद्यमान न हो। मन के अनुकूल और आवश्यकता के अनुकूल सभी सामग्रियों से युक्त हो। सर्वदा वैद्य, औषध और ब्राह्मण वर्गों से युक्त हो, ऐसी कुटी का निर्माण करावें।

रसायन का प्रयोग सभी मनुष्यों के लिए वांछनीय नहीं है। सुश्रुत में बताया है—

'अथ सप्त पुरुषा रसायनं नोपयुञ्जीरन्। तद् तथा अनात्मवान् अलसो द्ररिद्रः प्रमादी व्यसनी पापकृद् भेषजापमानी चेति सप्तभिरेव कारणैर्न सम्पद्यते। अज्ञानारम्भादस्थिरचित्तत्वाद्। दारिद्र्या-दनायत्तत्वादधर्म्माद्औषधालाभाच्चेति॥' (सु. चि. अ. 30)

रसायन के आयोग्य पुरूष :—

1. अजितेन्द्रिय 2. आलसी 3. दरिद्र 4. प्रमादी 5. व्यसनी 6. पाप कर्म में लिप्त 7. औषधियों का अपमान करने वाला ।

इस प्रकार सात और कारणों से रसायन सेवन नहीं किया जाता है— 1. अज्ञान 2. औषध का आरम्भ न करना 3. मन की चंचलता 4. दरिद्रता (धनाभाव) 5. पराधीनता 6. अधर्म 7. औषध का न मिलना ।

इस प्रकार से रसायन का प्रयोग कुछ भाग्यवान जितेन्द्रिय एवं सामर्थयवान ही इसका सेवन कर सकते हैं और ये लोग ही लोक कल्याण कर सकते हैं । इस प्रकार हमारे ऋषियों ने रसायन क्रिया के प्रत्येक पहलू को अच्छी प्रकार से जांच परख के बाद ही स्थापित किया ।

रसायन का प्रयोग कब करना चाहिये, इस विषय में सुश्रुत ने सु. चि. अ. 27 में बताया हैं :—

'पूर्व वयसि मध्ये व मनुष्यस्थ' रसायनम् । प्रयुञ्जीत भिषक् प्राज्ञः स्निग्धशुद्धतनोः सदा । नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रसायनो विधिः न भांति वाससि किल्ष्टे रङ्कयोग इवाहित : ।'

अर्थात् युवा अथवा मध्यावस्था में, स्निग्ध एवं शुद्ध शरीर वाले मनुष्य को ही रसायन का सेवन बुद्धिमान वैद्य सदा करावें । अशुद्ध शरीर पर रसायन विधि उसी प्रकार सम्भव नहीं है, जिस प्रकार काले कपड़े पर किसी और रंग का चढ़ना ।

आज जरूरत है—रसायन के उपरोक्त सभी पहलुओं पर अनुसंधान की । रसायनिक ऐसा विषय है जिसका उल्लेख संसार की प्रत्येक चिकित्सा प्रणालियों में किसी-न-किसी रूप में है । लेकिन संसार की बेहतरीन रसायन-क्रिया, रसायन-औषध, रसायन-आचार, रसायन-नियम, रसायन-प्रदेश एवं रसायन योग्य जीव तथा रसायन सम्बन्धि ज्ञान केवल आयुर्वेद में ही दिया है । हम बहुत भाग्यशाली है कि आयुर्वेद हमारी संस्कृति की देन है । आज धन्वंतरि दिवस के उपलक्ष्य में हमने इस विषय के ऊपर अपनी पत्रिका में विद्वान लेखकों के ज्ञान से पाठकों से परिपूर्ण लेखों द्वारा इस अछूते विषय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है । सभी आयुर्वेद के विद्वानों से पाठकों से एवं अपने प्रशासन से अनुरोध है कि रसायन विषय को प्रमुखता देते हुए संसार को अनउपलब्ध भेंट देकर सभी मनुष्य समाज को कृतार्थ करें ।

अन्त में :—

'गच्छतः स्खलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ।'

इस परम पुनीत उपदेश का स्मरण करते हुए मैं सभी विद्वानों से सअनुरोध प्रार्थना करता हूं कि इस पत्रिका में जहां भी कोई त्रुटि उन्हें दृष्टिगोचर हो उसकी सूचना कृपा कर लेखक को दें ।

"जय आयुर्वेद"

डॉ० हरिशंकर देव शर्मा
जीवन क्लीनिक
फतेहपुर चन्देला
फरीदाबाद

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

Dr. Anand's Ultrasoud and C T Scan Neurological Research Centre

F-24, Preet Vihar Vikas Marg, Delhi-92. Phone : 2201752, 2225599

Facilities available at the Centre

WHOLE BODY C. T. SCAN

ULTRASOUND

ECHOCARDIOGRAPHY

Broad Outlines of Utilities of C. T. Scan

1. Head and Neck : Headache, CVA, Neoplasms, injuries.
2. Thorax : Neoplasms, Lymph nodes, Alveolar and tracheo-bronchia diseases.
3. Abdominal Viscera
4. Skeletal System
5. Vertebral Column.

Broad Outlines of Utilities of Ultrasound

1. Ultrasound : Abdominal, obst/Gynae, Cranial, Thyrold, foilicula Studies and Pre-natal gender determination.
2. Echocardiography : With prior appointment.
3. Trans-vaginal probe facilitv is also available.

Timings : Monday to saturday 9 A.M. to 6 P.M.
Sunday 9.30 A.M. to 12 30 P.M.

Emergency CT Scan facility available round the clock.

Note : Special Discount for poor patients

Dr. K.L. ANAND
Medical Director

Scanned by CamScanner

आयुर्वेद और रसायन

डा. आर. एस. चौहान
अध्यक्ष A. I. I. M. G. A.
32, गणेश नगर विस्तार II
शकरपुर—दिल्ली–92

आयुर्वेद—आयुर्वेद अथर्ववेद का उपाङ्ग है-आयुर्वेद शास्त्र दो उद्देश्यों पर आधारित है।

1. रोग पीड़ित व्यक्तियों को रोग से मुक्त करना।
2. स्वस्थ पुरूषों के स्वास्थ्य की रक्षा करना अर्थात रोग उत्पत्ति के कारण को ही न उत्पन्न होने देना।

आयुः काम य मानेन धर्मार्थ सुख साधनम्।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेय परमादरः ॥

संसार के सभी कार्यों-धर्म,अर्थ, काम, और मोक्ष की सिद्धि स्वस्थ शरीर और दीर्घ आयु से ही सम्भव है अतः दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना करने वाले प्रत्येक मानव को आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करना और उसके उपदेशों का पालन करना चाहिए।

शरीरेन्द्रिय सत्वात्म संयोगो धारि जीवितम्।
नित्य गश्चानु बन्धश्च पर्य्यायरायु रूच्यते ॥

अर्थात शरीर, इन्द्रिय, मन और चेतना (आत्मा) इन चारों के संयोग अर्थात जीवन को ही आयु कहते हैं और इस आयु संबंधी समस्त ज्ञान को आयुर्वेद कहते हैं। आयुर्वेद अनादि है, क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से ही जीवन और स्वास्थ्य रक्षार्थ वायु, जल, अन्न आदि पदार्थों तथा उनके समुचित प्रयोग की आवश्यकता की अनुभूति के साथ ही विविध साधनों एवं उपायों का अन्वेषण और उनका उपयोग भी प्रारम्भ हुआ। यद्यपि परस्थिति वश उनमें समय-समय पर परिवर्तन भी होते आये किन्तु देश-काल आदि भेद से किंचित न्यूनाधिक होते हुए भी छन्दों के गुणों या प्राणियों के स्वभाव में मौलिक अन्तर कदापि न हुए और न हो सकते हैं। इसी प्रकार स्वास्थातुर-परायण आयुर्वेद के सिद्धान्तों में मौलिक अन्तर तो कदापि नहीं हुए हां देश-काल आदि परिस्थितिवश इन सिद्धांतों के आधार पर प्रयुक्त द्रव्यों एवं साधनों में विविधता और विचित्रता होना स्वाभाविक है। जैसे महास्रोत में संयुक्त किसी निज या आगन्तुक शल्य के निर्हरण रूप सिद्धांत के उपायों–वमन–विरेचन, वस्ति, शस्त्र कर्म आदि रूपों में अनेकता हो सकती है पर शल्यापहरण सिद्धांत सर्वमान्य सार्व भौम और जिकाला वांछित होगा। इससे यही सिद्ध होता है कि आयु संबंधी समस्त ज्ञान आयुर्वेद का विषय है, और आयुर्वेद को किसी एक देश, काल, भाषा या व्यक्ति को सीमा में बांधा नहीं जा सकता। इसी तरह विचारों में भिन्नता वाली वर्णमाला की विविधता की ही भांति त्रिदोषवाद, जीवाणुवाद, या अन्य किसी भी वाद के आधार पर वर्णित चिकित्सा और स्वास्थ्य के नियमों का भी एक ही उद्देश्य होता है।

Scanned by CamScanner

स्वास्थस्य स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकार प्रशमनेऽप्रमादः

धन्वन्तरि एवं उनके शिष्यों ने आयुर्वेद का अध्ययन कर मानव समाज में उसका प्रचार-प्रसार किया। भविष्य में होने वाली संतति में उत्तरोत्तर समूचे आयुर्वेद को कार्य चिकित्सा, शल्यतंत्र, शाला क्यतंत्र, कौमार भृत्य अगदतंत्र, भूतविद्या, रसायन, और बाजी करण इन आठ अंगों में विभक्त कर प्रत्येक अंग को अनेक संहिताओं को बनाया।

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरूणं वयः।
प्रभाव वर्ण स्वरौदार्य देहेन्द्रिय वलोदयम्।
वाक् सिद्धि वृषता कान्तिम वाप्नोति रसायनात्,
लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्॥

रसायन के सेवन से मनुष्य दीर्घायु, स्मृति, मेधा, आरोग्य, तरूणवय (यौवन) प्रभा, वर्ण, स्वर मे निर्मलता, शरीर, इन्द्रिय में वल, वाक सिद्धि, वृषता और कांति प्राप्त करता है जिससे श्रेष्ठ रस, रक्तादि धातुओं की प्राप्ति होती है वह रसायन है।

मनीषियों ने रसायन विधि 2 प्रकार की बताई है। इनमें प्रधान विधि कुटी प्रावेशिक है और दूसरी वातातपिक है।

रसायन सेवन से पूर्व पहले स्नेहन, स्वेदन करके, हरड़, आंवला, सैंधव, सोंठ, वंच, हल्दी, पिपली विड्ङ्ग और गुड़ इनको गरम पानी से पीएं। इससे भली प्रकार विरेचन होता है। विरेचन के उपरान्त शुद्ध शरीर वाले तथा पेया आदि संसर्जन कर्म किऐ हुए मनुष्य को तीन रात या पांच रात अथवा सात दिन तक जौ के अन्न को घी के साथ देवे अथवा पुरातन मल के शोधन होने तक जौ का अन्न घी के साथ देवे।

इस प्रकार कोष्ठ का संस्कार किए हुए पुरूष के लिए जो रसायन यौगिक सात्म्य को जानने वाला चिकित्सक विचार कर उसके लिए रसायन देना चाहिए।

1. ब्राह्मी रसायन को प्रातः सांय गौदुग्ध के साथ नियमित सेवन करने से शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी दूर होती है।
2. धात्री रसायन–6–6 माशे भोजन से 3 घण्टा पूर्व धारोष्ण दूध से प्रातः सांय उपयोग करें। यह रसायन अत्यंत पौष्टिक है आमाशय, मस्तिष्क व हृदय को वलवान वनाता है। जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। रस रक्तादि सभी धातुओं को पुष्ठ करने वाला है।
3. त्रिफला रसायन का लगातार सेवन करने से कठिन से कठिन रोगों में कमजोरी के साथ-साथ त्रिदोष नाशक होने से अत्यधिक लाभ देखा गया हैं।
4. रसायन रस– 1-1 गोली सुवह-शाम मधु से चटाकर ऊपर से गाय का दूध पिलावें—यह रस शक्तिदायक और त्रिदोष नाशक हैं वात रोगों में प्रमेह आदि रोगों में, फुसफुस की खराबी में, रक्तचाप आदि में यह रसायन अत्यन्त लाभकारी स्वर्ण युक्त होने के कारण इसका प्रभाव भी शीघ्र होता है।

Scanned by CamScanner

रसायन और आयुर्वेद

डा. अनुराधा भार्गव
बी. एस. सी., बी. ए. एम. एस.
सह सम्पादक-ए. आई. आई. एम. जी. ए.
653/8 आर. के. पुरम्, नई दिल्ली

एक मात्र आयुर्वेद ही ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसमें व्याधियों का औषध से निवारण तो किया जाता है, पर साथ ही साथ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य को नियंत्रित भी किया जाता है। जो औषध स्वस्थ पुरुष को ओज देता है, दीर्घ आयु देता है वह रसायन कहलाता है।

"लाभोपायो हि शस्तांना रसादोनां रसायनम्" अर्थात रसादि के लाभ का उपाय ही रसायन कहलाता है।

परिभाषा :—रसायन, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का एक ऐसा अंग है, जिसमें आयु को दीर्घ करने वाले जरा एवं रोगों के नाशक योगो का वर्णन है।

जिसके द्वारा शुभ गुण युक्त रसादि धातुओं की प्राप्ति हो वह रसायन है।

लक्षण :—रसायन के निम्न लक्षण हैं :—

(1) ये शरीर में जीवनीय शक्ति को बढ़ाता है।

(2) रसायन से रसादि धातुओं की प्राप्ति होती है। जिसके कारण ही जरा आदि शीघ्र अभिभूत नही करते और शरीर अन्य रोगों से भी बचा रहता है।

(3) स्वस्थ पुरुष को ओज देता है।

(4) ये पुरुष को बलवान रखते हुए दीर्घ आयु का उपभोग कराता है।

रसायन सेवन से लाभ :— (1) रसायन सेवन से पुरुष की देह और बुद्धि को शक्ति मिलती है।

(2) इसके सेवन से दीर्घ आयु निरोग काया तथा तरुणवय में बढ़ोत्तरी होती है।

(3) प्रभा आदि का शुभ और अधिक होना तथा स्वर की उदारता में वृद्धि होती है।

Scanned by CamScanner

(4) रसायन अपने विशेष गुणों के अतिरिक्त उत्पन्न व्याधियों को भी नष्ट करता है।

(5) रसायन के सेवन से शरीर में सर्वदा होने वाली धातुओं की क्षीणता को पूर्ण किया जाता है।

(6) रसायन के उपयोग से मन और बुद्धि की श्रेष्ठता होती है।

रसायन और आयुर्वेद ये दोनो शब्द एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। आयुर्वेद अपने आप में एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है जो काया में उत्पन्न रोगों का विनाश करती है। और स्वस्थ पुरूष के स्वास्थ्य की रक्षा भी करती है और ये काम रसायन योग ही करते हैं। रसायन आयुर्वेद का ऐसा अंग है जो स्वस्थ पुरूष को ओज देता है और शरीर को अन्य रोगों से भी बचाता है।

रसायन प्रयोग विधि :—रसायनों के प्रयोग के लिये प्राचीन काल से मुख्यतः दो विधियां ही जानी जाती है जो निम्न है :—

(1) कुटि प्रावेशिक

(2) वातातपिक

संशोधन औषधियों के यथाविधि प्रयोग से शुद्ध होकर निरोग तथा पुनः बलवान होने पर ही रसायन का प्रयोग करना चाहिए। जब यह महसूस हो जाए कि कोष्ठ शुद्ध हो गया है तब प्राकृति और सांत्मय को जानने वाले कुशल वैद्य के द्वारा रसायन का सेवन करें। जिस पुरूष को रसायन उपयोग करना हो उसकी प्राकृति का ज्ञान होना अति-आवश्यक है। और उसको कौन सा आहार-विहार व औषधि सात्म्य हैं, ये भी जानना आवश्यक है।

भेद :—रसायन यूं तो कई हैं पर उनको मुख्य तीन भांगों में विभाजित किया जा सकता है जो निम्न हैं।

(A) ब्रह्म रसायन योग :—इसमें ऐसे रसायन योगों का वर्णन है, जिनके सेवन से वृद्धावस्था, दुर्बलता, रोगी पन मृत्यु (काल से पूर्व मरण) को प्राप्त नहीं होते। इन रसायनों के प्रयोग से न केवल दीर्घ आयु ही प्राप्त होती है अपितु देवर्षियों से प्राप्त शुभ गति और अविनश्वर ब्रह्म भी प्राप्त होता है। कुछ ब्रह्म रसायन योग निम्न हैं च्यवनप्राश, ब्रम्ह रसायन, चार रसायनें (आंवले और हरड़े, आंवले और बेहड़े, हरड़े और बेहड़े अथवा आंवले हरड़ और बेहड़े) हरीतक्यादि रसायन।

(B) प्राण कामीय रसायन :—इसमें ऐसे रसायन योग है जो चिरकाल तक प्राण व जीवन के इच्छुक है उनके लिए उपयोगी हैं। जैसे देवताओं के लिए अमृत हितकर होता है। उसी तरह पुरूषों के लिए प्राणकामी रसायन उपयोगी है। आयु को को बढ़ाने वाला शरीर को स्वस्थ रखने वाला है। निंद्रा, तन्द्रा, थकावट, आलस्य

Scanned by CamScanner

दुर्बलता का नाश करते हैं। मांस को सदृढ़ बनाता है। शरीर में उपस्थित त्रिदोषों (वायु, पित और कफ) को साम्यावस्था में रखता है। अन्त: स्थिति अग्नि को प्रज्जवलित करता है। प्रभा वर्ण और इन्द्रिय प्रसन्न हो जाती है, और पुरूष सब कलेशों को सहन करने में सक्षम हो जाता है। इसके कुछ प्रचलित योग निम्न हैं :—आमलकघृत आमलक चूर्ण रसायन, नागबला रसायन, बलादि रसायन।

(C) करप्रचितीय रसायन :—इस रसायन का उपयोग महर्षियों ने किया। वे श्रम, व्याधि और जग से मुक्त होकर उसके प्रभाव से अवेद्व तपश्चवण कमते रहे थे।

पुराकाल में रसायन उपयोग द्वारा महर्षि तथा ब्रह्मचर्य ध्यानप्र शम् आदि से युक्त रहते हुए अपरिमित काल तक आयु का उपयोग करते रहे हैं। ये रसायन सहस्र वर्ष की आयु को देने वाले हैं। जरा तथा रोगों को शान्त करने वाले हैं। बुद्धि और इन्द्रियों में बल प्रदान करते हैं। इसमें मुख्य रसायन योग निम्न है :—आमलकाय ब्रह्म रसायन, केवला मलकर रसायन, लौहादि रसायन, ऐन्द्री रसायन, पिप्पली रसायन, त्रिफला रसायन, आदि। इस कर प्रचितीय रसायन में महर्षि ने सोलह सिद्ध रसायनों के प्रयोग कहे है। ये सोलह प्रयोग निम्न हैं।—

(1) अमलकाय ब्रह्म रसायन :—जो सहस्र वर्ष की आयु को देने वाला है। जरा तथा रोगों को शान्त करने वाला है, बुद्धि और इन्द्रियों में बल प्रदान करता है।

(2) केवलामलक रसायन :—इसके उपयोग से आयु बहुत ही दीर्घ हो जाती है। कान्ति तया वाणी अति उत्तम हो जातीहै।

(3) लौहादि रसायन :—लौह रसायन के लगातार एक वर्ष तक प्रयोग करने से पुरूष अभिधात आतंक जरा, मृत्यु इनसे अभिभूत नहीं होता। सेवन करने वाले पुरूष का प्राण व जीवन हाथी की तरह दृढ़ होता है। इन्द्रियां सदा अति बलवान रहती है। वह मनुष्य बुद्धिमान, यशस्वी तया महाधनी हो जाता है।

(4) ऐन्द्री रसायन :—यह सिद्ध रसायन जरा और रोगों को शान्त करता है। स्मृति मेघा को बढ़ाता है। ये रसायन आयुस्कर, पौष्टिक, और बल कारक है। स्वर्ण और वर्ण को शुद्ध करता है। इसका प्रयोग करने वाले पुरूष से अभिचार दरिद्रता, रोग परास्त हो जाते हैं।

इसके प्रयोग से कुष्ठ, उदररोग, पुराना विषम-ज्वर तथा मेघा, स्मृति और ज्ञान को हरने वाले अर्थात अपस्मार मूर्च्छा हिस्टिरीया आदि रोगों का नाश होता है।

(5)—(8) :—मेदय रसायन—ये चार रसायन हैं। ये रसायन आयुष्कर, रोगनाशक, बल अग्नि वर्ण और स्वर को बढ़ाते हैं। मेघा के लिये हितकर है। इन चारों में से शंखपुष्पी विशेषत: मेदय है। इनमें अनुमान के तौर पर गौ का दूध पिलाना चाहिये।

Scanned by CamScanner

(9–10)पिप्पली रसायन—यह रसायन पुष्टिकर स्वर के लिए हितकर, आयुष्कर, प्लीहोदर-नाशक वय: स्थापक तथा मेधा के लिए हितकर है ।

(11) पिप्पलीवर्धमान रसायन—दिन में दस पिप्पलियों का दूध के साथ प्रयोग करवाना चाहिए । प्रतिदिन जब ये जीर्ण हो जाय तब दूध औषधि के साथ सांठी के भात का भोजन करना चाहिए दोष और रोगी को देखते हुए बलवान पुरुष को पीसकर सेवन करवानी चाहिए । मध्यम बलवाले पुरुष को क्वाथ करके सेवन करवानी चाहिए । और दुर्बल पुरुष को पिप्पलियों का शीत कषाय पिलाना चाहिए ।

(12—15) त्रिफला रसायन :—ये चार हैं । इस रसायन के सेवन से रोगों का नाश होता है । एक वर्ष तक प्रयोग करने से यह रसायन मेधा, स्मृति तथा बल देता है, आयुष्कर है, धन्य हैं, जरा एवं रोगों को नष्ट करता है ।

(16) शिलाजीत रसायन :—विधि पूर्वक प्रयुक्त की हुई शिलाजीत रसायन वृस्य और रोगनाशक होती है । शिलाजीत को शोधकर ही प्रयोग में लाना चाहिए । इस पृथ्वी पर ऐसा कोई साध्य कहाने वाला रोग नही है, जिसे शिलाजीत उन-उन अवस्थाओं के योग्य योगो के साथ विधि पूर्वक प्रयुक्त होने पर नष्ट न करता हो । यह स्वस्थ पुरुषों को भी विपुल बल देता है ।

उपरोक्त रसायनों के वर्णन से हम देखते है कि रसायन और आयुर्वेद एक ही है अर्थात रसायन आयुर्वेद का एक ऐसा अंग है जिसके बिना आयुर्वेद अधूरा है । आयुर्वेद रोगों को नष्ट करने के साथ-साथ स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य को भी स्थिर रखता है और रसायन आयुर्वेद की इस परिभाषा पर खरा उतरता है ।

रसायन आयुर्वेद का एक ऐसा अंग है जो स्वस्थ पुरुष को ओज देता है और शरीर को अन्य रोगों से भी बचाता है ।

● ● ●

आयुर्वेद हमारी अमूल्य धरोहर है इसकी रक्षा करें ।

Scanned by CamScanner

आयुर्वेद में रसायन

आचार्य सोहनलाल वसन्त
मुख्य चिकित्साधिकारी
एस्कोर्ट चेरिटेबल आयुर्वेदिक
होस्पिटल फरीदाबाद

आयुर्वेद शब्द इतना व्यापक है कि इसमें जीवन की सब बातें समावित हो जाती है। सामान्यतया कहा गया है कि 'आयुषोवेदः' आयुर्वेदः अर्थात जीवन का शास्त्र ही आयुर्वेद है। आयु की रक्षा के लिए एवम् दीर्घायु की प्राप्ति के लिए "आयुषो हिताहितम् यस्मिन् स आयुर्वेद" ऐसा कहकर आयु अर्थात जीवन के लिए जो हितकारी तथा अहितकारी है, उनका वन ज्ञान जिस शास्त्र में हो वह आयुर्वेद है।

इस परिभाषा को ध्यान में रक्खा जाय तो संसार भर की कोई भी चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद से वाहर नहीं जा सकती। शास्त्रकारों ने इसीलिए कहा है कि "ज्ञातम् हि अल्पम् अज्ञातं हि अनल्पम्" अर्थात जाना हुआ वहुत कम है तथा अनजाना बहुत अधिक है अतः मनुष्य को सदैव ज्ञान के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। चाहे वह ज्ञान किसी के पास से भी मिले। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए हमारे पूर्वजों ने कहा है—"गोपालाः, अजपाः ये चान्ये वनचारिणः" अर्थात् गाय चराने पालने वाले, वकरी चराने वाले तथा अन्य जो भी वन में रहने वाले है उनसे औपधियों के विषय में जो भी जानकारी मिले उसे ग्रहण करना चाहिए। न कि इस अहंकार में रहकर कि इन गवालों अनपढ़ों से क्या लेना देना व अपने अज्ञान में वृद्धि करता रहे।

इस तरह आयु अर्थात् जीवन के लिए जो हितकारी भाव औपध आदि है, उनका वर्णन विस्तार से इस शास्त्र में किया गया है, जिससे व्यक्ति दीर्घायु व स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है किन्तु वह भी तभी संभव है जबकि उसे यह भी ज्ञात हो कि जीवन के लिए अहितकर क्या-क्या है? अहितकर का ज्ञान हुए विना उसका त्याग तथा निराकरण संभव नहीं हे अतः अहितकर का ज्ञान भी उतना ही आवश्यक है, जितना हितकारी भाव औपधादि का ज्ञान हो।

इस विस्तृत परिभाषा को ध्यान में रखते हुए हम आज आयुर्वेद में वर्णित 'रसायन' के विषय में कुछ विचार करेंगे। शास्त्रकारों ने कहा है स्वस्थस्य ऊर्जस्करम् आर्त्तस्य रोगनुत् अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति की ऊर्जा शक्ति ओज को बढ़ाने वाले, तथा रोगी के रोग को दूर करने वाले जो औपध भाव आहार-विहार हैं, उनका समावेश रसायन में होता है। अतः आयुर्वेद में अनेक प्रकार के रसायनों का विविध प्रकार से वर्णन किया गया है, जिनका समावेश इस छोटे से लेख में संभव नहीं है।

Scanned by CamScanner

रसायन शब्द उन्हीं औषधियों के साथ लगाया जाता है जो दोनों प्रकार के काम करें। अर्थात् जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य उर्जा शक्ति ओज कान्ति आदि के साथ दीर्घायुस्थ प्रदान करने वाली हों तथा रोगी के रोग को भी निर्मूल करने वाली हों। ऐसा नहीं जो रोग एक तरफ शान्त करे और अन्य प्रकार की प्रतिक्रिया करके अन्य उपद्रव रोग उत्पन्न कर दें। इसीलिए हमारे महर्षियों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व चिकित्सा एवम् औषधियों की ऐसी विशुद्ध एवम् शाश्वत् परिभाषा की जिसे पढ़कर गौरव अनुभव किया जा सकता है। आचार्य चरक ने चेतावनी देते हुए कहा है—

प्रयोगः शमयेत् व्याधिम् योऽन्यमन्यमुदीरयेत्।
नासौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेत् योन कोपयेत॥

अर्थात् वह चिकित्सा एवम् औषधि जो एक बीमारी को शान्त करे किन्तु दूसरी अन्य बीमारियों को पैदा कर दे, वह शुद्ध नहीं है। शुद्ध तो वह है जो रोगों को शान्त करे किन्तु किसी दूसरीं व्याधि या उपद्रव को उत्पन्न न करे।

किसी शाश्वत् सनातन्, सार्वकालिक, सार्वदेशीय परिभाषा है। इसी सिद्धान्त के आधार पर ही आयुर्वेद आज भी हजारों वर्षों की असंख्य बाधाओं के बावजूद भी अडिग-अडोल है तथा लोगों को ऊपर लिखित मंत्रों से सावधान कर रहा है। आज के जिस ज्ञान विज्ञान की चकाचौंध में सारी दुनिया अन्धी हो रही है, क्या उनकी अधिकतर औषधियां खोजें जो रोग नया-नया रूप लेकर सामने आ रही है, ऊपर लिखित परिभाषा पर खरी उतरती है? **निश्चय ही नहीं :**—इसलिए आज का मानव आधुनिक खोजों की प्रतिक्रिया से घबराया पीड़ित देखा जाता है। अनेक प्रकार के प्रयोगों अनुसन्धानों के बाद अविस्तृत औषधियां वर्षों तक मानव पर प्रयोगों के बाद निषिद्ध घोषित कर दी जाती है। अनेक प्रकार की औषध जन्य एलर्जियों से आज का मानव त्रस्त है। एक औषधि की एलर्जी को दूर करने के लिए दूसरी औषधि दी जाती है खोज की जाती है। क्या मजाक है?

इसी आधार को लेकर आयुर्वेद में रसायन शास्त्र का विधान है। हमारे रसायन स्वस्थ्य आदमी में इतनी उर्जा शक्ति एवम् ओज पैदा कर देते हैं कि जिससे उसकी रोग प्रति बन्धक शक्ति बढ़ जाती है। आधुनिक शब्दों में उसकी रजिस्टेन्स इतनी बढ़ जाती है कि सामान्य व विशेष आघातों को भी सह सकें। शरीर में सहन शक्ति की कमी के कारण ही तो उपद्रव प्रतिक्रिया एलर्जी-रिएक्शन आदि उत्पन्न होते हैं। रसायन सेवन वाले व्यक्ति पर छोटे मोटे प्रहार नाकाम हो जाते हैं। इसलिए रसायन सेवन बहुत आवश्यक है।

रसायनों का सेवन दो प्रकार से किया जा सकता है। एक कुटी प्रावेशिक विधान से तथा दूसरा वास्तविक ढंग से। प्रथम में विशेष स्थान वातावरण में विशेष प्रकार के विधान से कुटी बनाई जाती है। उसमें प्रविष्ट व्यक्ति को पंचकर्म पद्धति से पूर्णतया शोधन करके रसायन सेवन कराए जाते हैं जिससे कायाकल्प संभव होता है। प्राचीन काल में यह पद्धति बहुत प्रचलित थी इसीलिए हमारे महर्षि-महर्षि लोग सैकड़ों हजारों वर्षों तक नीरोग रहते हुए जीवित रहते थे एवम् लोक कल्याण में रत रहते थे।

दूसरा प्रकार (वातातविक) साधारण आम व्यक्ति के लिए है, जो चलता फिरता अपने रोजमर्रा के आवश्यक काम करता हुआ भी रसायन औषधियों का सेवन करता हुआ यथेष्ट लाभ उठा सकता है।

Scanned by CamScanner

किन्तु इस प्रकार से भी रसायन सेवन से पूर्ण यथोचित ढंग से शोधन करना जरूरी है। जैसे कपड़े को रंगने से पूर्व धोना जरूरी है उसी प्रकार रसायन सेवन से पूर्व शोधन जरूरी है, अन्यथा रसायन सेवन का लाभ नही मिलेगा।

प्रश्न उठता है—आज च्यवनप्राश-ब्रह्म रसायन आदि अनेक प्रकार के शास्त्रीय रसायन क्यों नहीं लिखे अनुसार गुण करते देखे जाते ? क्योंकि एक तो उनका निर्माण ही शास्त्रोक्त विधि द्वारा नहीं किया जाता। फिर उनका सेवन शरीर शोधन के बाद नहीं किन्तु ऐसे ही मर्जी मुताबिक बिना किसी के उचित निर्देशों के भी किया जाता है। उनकी मात्रा, समय, अनुमान, आदि के विषय में भी अनेक प्रकार की भ्रांतियां अज्ञान है।इसीलिए पूर्ण लाभ दृष्टि गोचर नहीं होता। इसके अतिरिक्त-शास्त्रों में एक और रसायन का विधान हैं। वह है-**आचार रसायन** इसका वर्णन भी आयुर्वेद में विस्तार से दिया गया है, मनुष्य जीवन में सही दिशा में तथा निर्देश के अनुसार आचारों का सेवन करे तो वह भी रसायन गुण प्राप्त कर सकता हैं, अर्थात निरोगता दीर्घायुस्य प्राप्त कर सकता है।

रसायन औषधियां क्या और कैसे काम करती हैं :—

रसायन औषधिया शरीर की अजीर्ण शीर्ण स्थिति को बदल कर पुनर्वनिर्माण का काम करती है। इसीलिये च्यवनप्राश के गुणधर्मो में-'सस्य प्रयोत् च्यवनः सुवृद्धोऽभूत् पुनर्युवा'-अर्थात् इसे च्यवनप्राश के प्रयोग से बहुत बूढ़े च्यवन महर्षि फिर से युक्त हो गए। यह कोई झूठी कहानी या गप्प नहीं है। आज भी यदि च्यवनप्राश शास्त्रीय पद्वति के अनुसार पूरी तरह सही बना तो और पूर्ण मात्रा में लगातार उसका सेवन किया जाय तो निश्चय ही पुनर्निर्माण वाली स्थिति आ जाती है। यह हमने स्वयम् प्रत्यक्ष अनुभव किया है। इसी तरह श्वास तथा कास के रोगियों के लिए भी च्यवनप्राश बहुत लाकारी सिद्ध हुआ हैं, क्योंकि च्यवनप्राश के गुण धर्म वर्णन में सर्वप्रथम लिखा है। इत्ययम् च्यवनप्राश. परमुक्तो रसायनः। श्वास का सहर श्चैव विशेषकंवदिश्यते इसी को आधार मानकर हमने अनेक श्वास एवम् कास रोगियों को निरन्तर 30-30 ग्राम सुबह-शाम खिलाकर लाभान्वित होते देखा हैं। च्यवनप्राश के विषय में सामान्य लोगों को अनेक प्रकार की भ्रान्तियां बनी हुई हैं। जैसे च्यवनप्राश गर्म होता है अतः शर्दियों में ही खाना चाहिए आदि। जबकि यह बिलकुल मिथया धारणा है। च्यवनप्राश का शरीर आंवले का है तथा अन्य जड़ी बूटियों का मिश्रण है जो जीवनीय वर्ग की होती है। इसीलिए बालवृद्ध सभी के लिए लाभदायक बताया गया है।

इसी प्रकार भल्लातक के अनेक रसायन प्रयोग चरक में तथा अन्य शास्त्रकारों ने लिखे हैं किन्तु आज का सुपठित वैद्य समाज भी भल्लात रसायन के प्रयोगों से अनुभव हीनता के कारण आत्म विश्वास विहीन होकर भयातुर रहता है, भल्लातक एक बहुत ही विचित्र एवम् शोध कार्यकारी औषधि रत्न है। हम इसका निर्भयतापूर्वक खूब प्रयोग करते हैं और अनेक रोगी लाभान्वित होते हैं।

चरक के रसायनाधिकार में वर्णित रसायन प्रयोगों को कितने वैद्य एवम् औषध निर्माता फार्मेसियां बनाते हैं ? यदि विधिवत् उनका निर्माण किया जाय तो मान-आन की व्यथित-पीड़ित मानवता की कितनी सेवा हो सकती है।

Scanned by CamScanner

दु:ख की बात तो यह है कि सुप्रचलित च्यवनप्राश को भी ही सही ढंग से बहुत कम प्रयोग बनाते हैं। उसे स्वादिष्ट एवम् सुग्राह्य बनाने के चक्कर में तथा अधिक लाभ बटोरने की इच्छा से सभी फार्मेसियां स्पेशल च्यवन का प्रचार करने लगी है। मैं इसे नकली च्यवनप्राश कहता हूं। आप क्यों शास्त्रीय रसायन को अपने लाभ के लिए विकृत करते हैं ? स्पेशल बना कर कुछ विशेष मिला दिया। कुछ घटा दिया जो शास्य में लिखा हुआ है। स्वादिष्ट बनाने के लिए तो क्या यह नकली नहीं हुआ ? क्या यह इतना लाभ करेगा ? मत भरमाइए जनता को अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए ! लोगों की मनहारियों को बदलने का पाप मत करिए। लोगों शुद्ध शास्त्रोय च्यवनप्राश ही खिलाइए तो आयुर्वेद तथा लोगों को कल्याण होगा।

हमारे रसायन मानव शरीर की जीर्ण तथा सढ़ने गलने वाली व्यवस्था को बदलने की क्षमता रखते हैं। अत: हम वैद्य समाज का आह्वान करते हैं कि अपनी अमूल्य धरोहर का सही ढं से उपयोए करके यश वर्धन दोनों का प्रचुर लाभ उठाइए। आयुर्वेदीय रसायनों जैसी औषधियां अभी तक आधुनिक जगत में विकसित नहीं हो पाई हैं। इसीलिए आधुनिक चिकित्सक भी आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्वति की तरह आकृष्ट होने लगे हैं। अत: आइए आयुर्वेद के अमूल्य रत्नों रसायन औषधियों का फिर से प्रचार-प्रसार कर आयुर्वेद की ख्याति को अधिकाधिक बढ़ाएं।

पुनश्व—शास्त्रों में कहा गया है कि शरीर माहमम् खलु धर्म साधनम् अर्थात धर्म और कर्म का भी साधन स्वस्थ शरीर ही है इसीलिए आचार्य चरक ने कहा है—सर्वमन्यत् परित्चज्य शरीर मनुपालयत् तदभावे हि भावानां सर्वाभाव: शरोरिवाम् अर्थात् सब कुछ छोड़कर शरीर की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि उसके अभाव में मानव के सब भावों कर्त्तव्यों इच्छाओं का अभाव हो जाता है।

इसी प्रकार अन्य रसायन औषधियों के विषय गलत धारणाएं वैद्य समाज में भी व्याप्त है। एक अन्य उदाहरण के लिए शिलाजीत प्रयोग को लिया जा सकता है। मधुमेंह के रोगी के लिए 'शिलाजतु तुलामदयात्' शिलाजीत पांच सेर तक सेवन करा देना चाहिए। और इसकी मात्रा एक कर्ण यानि 1 तोला तक की बतलाई गई है।

क्योंकि शास्त्र में आचार्य चरक ने शिलाजीत के विषय में लिखा है-'नात्युस्यं नाति शीतम्' अर्थात् शिलाजीत न अधिक उच्च है और न अधिक शोता फिर क्यों मदहोना चाहिए यदि शिलाजीत सही ,शुद्ध हो तो आचार्य आगे लिखते हैं। शिलाजतु प्रयोगेषु—विदाहीनि गुरूणि च वर्जयेत-विदाह करने वाला तथा भारी आहार नहीं लेना चाहिए।

इसी प्रकार शिलाजीत के गुणकर्मों के लिए वही दृढ़ता से लिखते हैं-"न सोऽरिम रोगों भुवि साधारूप: शिलाह्वयम् यं न जयेत् प्रसह्य"। तस्कालं योगै विविधै: प्रयक्तम्-स्वस्थस्य चोजों विपुलाम्दधाति।

इसके आधार पर रोग निवारण तथा स्वस्थ की स्वास्थ रक्षा दोनों कार्य शिलाजत् रसायन करता है। पता नहीं क्यों वैद्य समाज में ही आज रसायन प्रयोगों के विषय में अत्यधिक हीन भावना व्याप्त है।

Scanned by CamScanner

"रसायन और आयुर्वेद"

डा.| चन्द्रशेखर भारद्वाज

(बी. ए. एम. एस.)

सीही गेट रोड़, बल्लबगढ़

हिताहितं सुखं दुखमायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥ (च. स.)

Ayurveda is the science which treats of what is advantageous and what is harmful for the body and also the happy and unhappy states of life. It describes what is good and what is bad for human life, its measurements and other related matters.

Ayurveda has eight distrint branches : (i) General medicine (ii) Major Surgery (iii) Ear, Nose, Throat and Mouth diseases (iv) Psychiatry (v) Midwifery (vi) Toxicology (vii) RIJUVINATION (viii) Aphrodiansics.

Ayurveda texts contain detailed instruction about body care personal hygiene. Chewing of various spices and nuts is recommended for clasity, taste and good small of mouth. Gargling with sesame oil is said to enhancs the strength of the jaws, gives depth of voice and results in the plumpness of the face. Regular oiling of the hair and the ears and periodical massages are a part of the normal body care, Massage is supposed to make the physique smooth, strong and charming and prevents the on slaught of age. The use of scents and garlands of flowers is said to stimulate the libido, produces good smell in the body and enhances the logevity and charm. Frequent intercoure is recomended in winter to keep the body's vigour and abstention from sex is prescribed for summer.

Scanned by CamScanner

रसायन की आवश्यकता :

मानव जीवन में यौवन के समान सुखकारी व जरा के समान कष्टकारी शायद ही कोई वस्तु हो यौवन वह अवस्था है जब मनुष्य के शरीर में और मन में शक्तियों व एषणाओं का का तूफान उछलता है। यही वह अवस्था है जब मनुष्य संसार के बड़े से बड़े कार्य करने को उत्साहित रहता है। परन्तु खेद है, यह अवस्था स्थिर रही रहती और देखते ही देखते मनुष्य अपनी इस सम्पत्ति को खत्म होते देखकर भी कुछ करने में असमर्थ रहता है। इसीलिये तो कहा है :—

जो जाफर कभी न आये, वह जवानी देखी ।
जो आकर कभी न जाये, वह बुढ़ापा देखा ।।

यह अलभ्य वस्तु न जाये या जाकर पुनः प्राप्त हो जाये, इसके लिये समस्त मानव जाति, राजा क्या रङ्क, स्त्री क्या पुरूष सभी लालायित रहते हैं।

कारण :—

सर्वे शरीर.....बहुलानाम् ।।

खट्टे, नमकीन, चटपटे, खारे सूखे शाक, मांस , तिल, पलल, पिठी के अन्न का भोजन, अंकुरित धान्य, नये उत्पन्न हुए शूक धान्य, शमी धान्य, विरूद्ध आसात्म्य, अभिष्यन्दकारी द्रव्यों का सेवन विषमासन, अध्यशन का सेवन, नित्य दिवा शयन, नित्य स्त्री व मद्य सेवन, विषम मात्रा में व्यायाम करने वालों का शरीर क्षुब्ध हो चुका है, उनका भय, क्रोध, शोक, लोभ, मोह और बहुत श्रम करने वालों को उपरोक्त वर्णित ग्राम्याहार के कारण शरीर के तीनों दोष प्रकुपित होते हैं। इन कारणों से मांस पेशियां शिथिल, अस्थि सन्धियां ढीली, रक्त विदग्ध हो जाता है। मेद बह निकलता है। मज्जा अस्थियों में एकत्र नहीं होती, न वीर्य प्रकृति होती, ओज का क्षय होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति ग्लानियुक्त, उत्साहहीन, निद्रा, आलस्य से घिरा, शारीरिक व मानसिक चेष्टाओं में असमर्थ, बुद्धि-स्मृति का ह्रास, वह रोगों का अधिष्ठान भूत होकर अपनी सम्पूर्ण आयु को प्राप्त नहीं कर पाता है।

रसायन शब्द की व्युत्पत्ति :—

रसायन शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों से मिलकर हुई है 'रस' व 'अमन' जो बराबर गतिशील रहे उसे रस कहा जाता है । 'अमन' शब्द का अर्थ मार्ग व प्राप्ति पाया जाता है। इस प्रकार रसायन शब्द का अर्थ उत्तम रस की प्राप्ति का साधन हैं।

यज्जरा व्याधि विध्वसी भेषजं तद्रसायनम् ।
स्वस्थस्यौजस्करं यत्तु तद्वृष्यं तद्रसायनम् ।
रसायनं तु तव्प्रोक्तं मज्जराव्याधिनाशनम् ।

जो औषध जराव व्याधि को नष्ट करती है, स्वस्थौजस्कर औषध को रसायन कहा है।

Scanned by CamScanner

रसायनां द्विविधं प्रयोगं मृषयो विदुः ।
कुटी प्रावेशिकञ्चैव वातातपिक मेव च ।।
(1) कुटी प्रावेशिक व (2) वातातपिक

इन दोनों के प्रयोंग की भी मर्यादा निश्चित की हुई है ।

समर्थानामरोगानां धीमतां नियतात्मनाम् ।
कुटी प्रवेशेः क्षमिणां परिच्छदवतां हितः ।।
अतोऽन्तथा तु ये तेषां सौर्यमारुतिकी विधि ।
तयोः श्रेष्ठतरः पूर्वोविधि सा तु दुष्करः ।।

अर्थात् समर्थो नीरोगों. बुद्धिमान-आत्मसंयमियों, क्षमाशील और बन जन से सम्पन्नों के लिये कुटी प्रावेशिक हितकर है । पर जो इन से विपरीत हैं, उनका हित वाततपिक विधि अपनाने में ही है ; यह ठीके है कि इन दोनों में कुटी प्रावेशिक विधि श्रेष्ठत रहे, परन्तु है अत्यन्त कठिन ।

वय :—

पूर्व वयसि मध्येवा मनुष्यस्य रसायनम् ।

वैसे तो रसायन औषधियों का प्रयोग कभी भी किया जा सकता है । परन्तु पूर्व या मध्य आयु (जवानी या प्रौढावस्था) में ही रसायन का अत्यन्त लाभ होता है ।

यह ठीक है जरा व्याधि विध्वंसि को रसायन कहा जाता है परन्तु देखा यह गया है कि जरापक्व शरीरों के लिये रसायन बहुधा व्यर्थ रहती है या उपयुक्त परिणाम नहीं मिलता अर्थात् यौवन तथा प्रौढ़ावस्था ही सर्व सम्मत समय है ।

रसायन से पूर्व संशोधन आवश्यक है :—

कुटी प्रवेश करने से पूर्व वमनादि पञ्चकर्म द्वारा शुद्ध होकर पुनः बल प्राप्त करके पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर ही रसायन का सेवन करना चाहिए, ऐसा चरक में वर्णन है । सुश्रीत में भी आया है—

अविशुद्धशरीरस्य युक्तो रसायनोविधिः ।
न भाति वासासि किलष्टे रङ्गयोग इवार्पितः ।।

संशोधन कर्म किये बिना प्रयोग की गई रसायन विधि उसी प्रकार व्यर्थ है, जिस प्रकार बिना शुद्ध किये मैले कपड़े को रंगना । जिस प्रकार मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता उसी प्रकार मल युक्त शरीर पर रसायन का प्रभाव नहीं होता है ।

नैमित्तिक रसायन :—

जो रसायन भैषज किसी विशिष्ट रोग की चिकित्सा में रोगी के बल उत्साह को बढ़ाने के उद्देश्य से एवं रोग से रोगी को छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से प्रयोग किया जाया है, वह रसायन उस विशिष्ट रोग के लिए नैमित्तिक रसायन है ।

Scanned by CamScanner

रसायन की कार्य विधि :—

आयुर्वेद में वर्णित रसायन तीन विधियों से आयुष्य के कार्य सम्पादन में सहायता करते हैं। प्रथम तो कुछ द्रव्य सीधे रस संवहन में मिलकर शरीर को शक्ति प्रदान करते है यथा-चीनी, शतावरी दूसरी प्रक्रिया में शरीर की अग्नि कार्यरत होती है यथा-पिप्पली/तीसरी प्रणाली में स्रोतसों का ग्रहण किया जा सकता है यथा-गुंग्गुलादि औषध द्रव्य, स्रोतसों के शुद्धिकरण में भाग लेते हैं। क्योंकि सूक्ष्म से सूक्ष्म स्रोत सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक cell को आहार प्रदान करते हैं। यदि वे विकृतांवस्था को पहुंच जाये तो शरीर यन्त्र धीरे-धीरे जीर्णावस्था को प्राप्त होने लगता है। अतः रसायन इन विधियों से शरीर यन्त्र को संचालित रखने में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

आधुनिक वैज्ञानिक मुख्यतः चार प्रकार के सिद्धान्तों पर आयुष्य के विषय में विचार करते हैं:

(i) Wear & tear theory of Aging. (ii) Genetic theory of Aging

(ii) Stress theory of Aging. (iv) Auto innune theory of Aging

प्रथमतः तो इस नश्वर संसार में उत्पन्न वस्तुएं जिस प्रकार समानुसार जीर्णावस्था को प्राप्त होती है, उसी प्रकार आयुष्य मनुष्य के जन्मोपरान्त नियम समय पर जीर्ण होकर वृद्धावस्था के पश्चात् अन्तकाल को प्राप्त होता है जो कि अपरिवर्तनीय है।

द्वितीयतः यह शरीर एक निश्चित समय तक चलता है। यह परिवार, माता–पिता पर निर्भर करता है। शरीर का प्रत्येक cell अपनी आयु पूर्ण कर अन्तकाल के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। Cellular theory के अनुसार वैज्ञानिक हैलिक ने पता किया कि fibro blast ह्रास होने से पूर्व एक निश्चित सीमा तक ही Double होते हैं। और क्रमशः वृद्ध होते जाते हैं। उनमें विभक्त होने की क्षमता का नाश हो जाता है और अन्ततः मृत्यु की प्राप्ति करता है। कोशिका कितनी बार Double हुई यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोशिकादाता की आयु कितनी है तथा उस जाति की आयु कितनी है। जैसे चूहों की कोशिकायें 28 बार से अधिक द्विगुणित नहीं होती। बाद के परिणामों से निष्कर्ष निकला कि साधारणतया जितनी अधिक किसी जाति की आयु की अवधि (Lifespan) होगी, उतनी ही अधिक बार उसकी कोशिका उत्पन्न होने पर विभाजित होगी।

तृतीयतः मनुष्य प्रतिक्षण वाह्य तनावों से घिरा रहता है। इन तनावों की सूचना मस्तिष्क की पीयूष ग्रन्थि को मिलती है। पीयूष ग्रन्थि सेACTH नामक हार्मोन का उत्सृजन होता है। उसी के साथ ही Renal gland से Cortisal नामक हार्मोन तथा Medulla से Adrenaline का निष्क्रमण होता है। दूसरी तरफ Autonomic nervous System सीधे Sxperficial nervous sysrem को प्रभावित कर Adrenaline and noradre naline का निष्क्रमण करता है। यह Harmones सम्पूर्ण शरीर में परिभ्रमण करते तथा दो प्रकार के प्रभाव दिखाई पड़ते हैं :—

(i) Vascular effect--संकुचित रक्त संवहन स्त्रोत शरीर के cells को पूर्ण रूपेण आहार नहीं पहुंचा पाते। जिसके कारण cell कमजोर हो जाते हैं तथा इसका प्रभाव शरीर की आयु पर पड़ता है। (ii) Metabolic effect :—के अनुसार पाचन संस्थान पूर्णतः कार्यरत नहीं हो पाता, जिसका कुप्रभाव सम्पूर्ण शरीर पर पड़ता है।

Scanned by CamScanner

रसायन औषधियां :—

चतुर्थत: हम देखते हैं कि जन्म से 2 वर्ष की अवस्था तक थायमस नामक glard का विकास पूर्ण हो जाता है तथा पूर्ण युवावस्था के आगमन पर शनैः शनैः उसका ह्रास हो जाता है। यह gland स्त्री पुरूष दोनों में ही समान प्रक्रियाओं का संचालन करती है। परीक्षण के तौर पर यह भी देखा गया है कि यदि इस ग्रन्थि को बचपन में ही निकाल दिया जाय तो बाल्यावस्था में ही युवावस्था के लक्षण प्रादुर्भूत हो जाते है। इस ग्रन्थि का आयुष्य पर विशेष प्रभाव है। एक आस्ट्रेलियन वैज्ञानिक ने यह सुझाव दिया कि शरीर में Thymus gland ही Biological Clock और वही यह निर्धारण करती है कि हम कितने शीघ्र बुढ़ापे की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह gland शरीर के लिये Pacemaker (गतिक्रम रोधक) के समान कार्य करती है और इसका क्षय भविष्य में आने वाली वह घटना होगी जो कि जीव को वृद्धावस्था की ओर अग्रसर करती है।

योग का महत्व :—

चरक में स्पष्टतः निर्देश है कि रसायन उसी व्यक्ति के लिए हितकर है जो आचार रसायन के अंगों का पालन करता है। सात्विक मनोवृत्ति की पृष्ठ भूमि में सी वृष्य औषधियां प्रभावशाली होती हैं आचार रसायन के अन्तंगत वही व्यवहार आते हैं जो अष्टांग योंग यम-नियम केअन्तंगत हैं :—

यम — अहिसा सत्यमस्तेय, ब्रह्मचर्य क्षमावृति।
दयार्ज्यवं मिताहार शौचं चैव यमादशाः॥

नियम — तपः सन्तोष आस्तिक्यं, दानमीश्वर पूजनं।
सिद्धान्त वाक्य श्रवणं, ह्रमति च तपोहुतम्॥

पातञ्जल योग सूत्र में योग के आठ अंगों-यम नियम, प्राणायाम, आसन, धारणा, ध्यान, प्रत्याहार तथा समाधि का वर्णन आया है। इनमें से प्रथम चार की क्रियाओ का सम्बन्ध स्थूल रूप से अजरत्व के लिये रसायान प्रक्रिया के साथ है। अन्त के चार की प्रक्रिया अजरत्व से ऊपर उठकर अमरत्व की ओर अग्रसर करती है। आसनों में सर्वांगासन, अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन, मयुरासन प्रमुख है। इनसे ग्रन्थियो के स्राव ठीक रहते है। जठराग्नि प्रदीप्त रहती है।

(1) रसायन होते हुए भी व्याधि विध्वंसि :—कुछ योग प्रमुख रूप से स्वास्थ्य की अभिवृद्धि करते हैं यथा-च्यवनप्राश, ह्र रसायन आदि।

(2) व्याधि विध्वंसि होते हुए भो रसायन :—कुछ रोग ऐसे होते हैं, जो प्रमुख रूप से व्याधि का नाश करते हुए मी रसायन का कार्य करने की क्षमता रखते हैं। यथा-सर्पि गुड़, योगराज रसायन आदि।

(3) आंवला रसायन के साथ-साथ व्याधि विध्वंसि भी है। यह त्रिदोषनाशक, इन्द्रिय शक्ति–अग्नि वर्धक, विरेचनोपग है। चरक में आंवले से अमृत प्राप्ति का विवेचन भी आया है।

(4) आयुर्वेद चिकित्सा में रसायन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान पारद तथा पारदीय रसौषधियों का है।

(5) अभ्रक, वैक्रान्त, स्वर्णमाक्षिक, शिलाजीत, गन्धक, हरताल, मनःसिला, हिङ्गुल, हीरक,

Scanned by CamScanner

मानिक्य रत्न भी रसायन कहे गये हैं।

(6) धातुओं में स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, नाग, वंग के प्रयोग कहे हैं। लौह धातुवर्ग के अन्य द्रव्यों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। इसकी अल्प मूल्य में सर्वत्र उपलब्धि व शरीर में रक्त के आवश्यक तत्व के रूप में उपस्थिति लौह के समान उत्तम दूसरा कोई भी रसायन प्राणियों के लिए नहीं है।

(7) अग्नि पुराण में बहुत से योगों का वर्णन आया है। एक योग प्रस्तुत है—हरीतकी, विभीतक आमलक, मरिच, पिप्पलीभूत, चित्रक, शुष्ठी, पिप्पली, गुडुची, बचा, निम्ब वासक, शतमूली, सैन्धव, निर्गुण्डी, कण्टकारी, गोक्षुऊ, बिल्व, पुनर्नवा, बला, एरण्ड, मुण्डी, रूचक, भृङ्गराज, क्षार, पर्पट, धनिया खदिर, करंज, हरिद्रा, जीरक, शतपुष्पी, यवानी, विडंग, वचा एवं सर्पप। ये छतीस औषधियां हैं। इन औषधियों का चूर्ण या रस से भावित वटी, अवलेह, कषाय-गुड खांड, घृत या मधु के साथ खाया जाये या इनके रस से भावित घी तेल का जिस तरह भी उपयोग किया जाये तो वह सर्वथा मृत संजीवन होता है। आधे या एक पल के माने में इसका उपयोग करने वाला पुरूष यथेष्ट आहार विहार में रहकर 300 वर्षों तक जीवित रहता है। मृत संजीवन कल्प से बढ़कर दूसरा योग नहीं।

रसायन का प्रयोग करके मनुष्य चिरायु स्वास्थ्य, स्मृति, यौवन, सौन्दर्य, शारीरिक शक्ति, योग्यता तथा बुद्धि प्राप्त करता है।

● ● ●

एगमा एसोशियेसन की ओर से उत्तरकाशी भूकम्प पीड़ितों के लिये

उत्तरकाशी के भूकम्प पीड़ितों हेतु एमगा रिलीफ फन्ड में सहयोग देने की कृपा करें।

धन्यवाद

—अध्यक्ष

डा. आर. एस. चौहान

Scanned by CamScanner

रसायन और आयुर्वेद के लाभ

डा. संजीव भार्गव
बी. ए. एम. एस.
सचिव, AIIMGA
आल इन्डिया इन्डियन मेडिसन एसोशियेसन
77, बसन्त नगर नई दिल्ली-57

मानव शरीर पंचमहाभूतों से (वायु, अग्नि, जल, आकाश और पृथ्वी) मिलकर बना है। इन पांचों का निश्चित अनुपात होता है। इसी शरीर में बात, पित और कफ तीनो सम्मिलित व सामान्य अवस्था में रहते हैं। इन त्रिदोषो की सम अवस्था ही स्वास्थ्य और विषम अवस्था व्याधि कहलाती है। आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है जो अपने आप में एक विशेषता रखती है। और वो विशेषता ये है कि सिर्फ आयुर्वेद ही एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसमें रोगों का विनाश तो किया ही जाता है। साथ ही साथ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा भी की जाती है। और ये स्वास्थ्य की रक्षा रसायन के द्वारा की जाती है। शरीर में सर्वदा होने वाली धातुओं की क्षीणता को रसायन औषध से पूर्ण किया जाता है।

"स्वस्थस्यौजस्करं यत्तु तद् वृष्यं तद्र रसायनम्"

अर्थात् जो भेषज स्वस्थ पुरूष को ओज देता है, वह प्राय: वृष्य और रसायन हैं। दूसरी प्रकार की भेषज प्राय: रोगों की शामक मानी गई है। यहां पर प्राय: जो कहा गया है वह विशेषता जताने के लिए कहा गया है।

जब मनुष्य का ओज क्षय हो जाता है। वह डरने लगता है। और दुर्बल होकर सर्वदा किसी एक विषय का ही ध्यान करता है, उसकी सभी इन्द्रियां व्यथित रहती है। शरीर की कान्ति नष्ट हो जाती है, मन दुःखी रहता है। इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए रसायन का प्रयोग किया जाता है जैसे :—ब्राम्दी रसायन, च्यवनप्राश, आमलकी रसायन, त्रिफला रसायन, हरीतकी रसायन।

Scanned by CamScanner

रसायन का लक्षण :—"लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्" प्रशस्त रसादि के लाभ का उपाय ही रसायन कहलाता है।

अर्थात् जिसके द्वारा शुभ गुण युक्त रसादि धातुओं की प्राप्ति हो वह रसायन है। इन्हीं प्रशस्त रसादि धातुओं की प्राप्ति के कारण ही जरा आदि शीघ्र अभिभूत नहीं करते और शरीर अन्य रोगों से भी बचा रहता है। सात्विक आहार से मन और बुद्धि भी सात्विक होती है। इसीलिए मन और बुद्धि की श्रेष्ठता भी रसायन के उपयोग से हुआ करती है।

ऋषियों ने रसायनों के दो प्रकार के प्रयोग की विधि मानी है।

(1) कुटि प्रोवीशक (2) वातातपिक

जो पुरूष समर्थ हो, शक्तिशाली हो, नीरोग हो, बुद्धिमान हो, अपने को बश में किए हुए हो, काम क्रोध, शोक आदि से रहित हो, क्षमाशील हो और धन जन आदि से सम्पन हो उन्हें कुटी प्रवेश करना चाहिए।

इनसे जो विपरीत है उनके लिए वातातपिक विधि ही हितकर है। इन दोनों में से कुटि प्रवेश विधि ही श्रेष्ठ है। पर उसके विधान का पालन अत्यन्त दुष्कर होता है।

आचार रसायन :—सत्यवादी, क्रोध रहित, मध पान, अहिंसक श्रमरहित, प्रियभाषी, पवित्रता में तत्पर, धीर, तपस्वी आचार्य गुरू एवं ज्ञान वृद्धि और वयोवृद्ध पुरूषों की पूजा व सेवा में रत, नित्य क्रूरता से रहित, सदाचार युक्त, उदार, जिसकी इन्द्रियां आत्मज्ञान की ओर झुकी हुई हैं। धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय करने वाला तथा तदनुसार आचरण करने वाला पुरूष नित्य रसायन सेवी ही है-ऐसा समझना चाहिए। अर्थात इन सद्वृत्तो के पालन से ही उसे रसायनोक्त लाभ हो जाते है। इन गुणों से युक्त होकर जो पुरूष रसायन औषधों का सेवन करता है वह रसायन के सम्पूर्ण उक्त गुणों को प्राप्त होता है।

आयु को अत्यन्त दीर्घ करने वाले जरा एवं रोगों के नाशक रोग (रसायन) उन्हीं पुरूषों में सिद्धि देते हैं, जिनका मन और शरीर शुद्ध है, और जो संयमी है।

रसायन सेवन के लाभ :—पुरूष रसायन के सेवन से दीर्घ, आयु, स्मृति, मेधा, आरोग्य, तरुण, वय, प्रभावर्ण और स्वर की उदारता. द्वेष और इन्द्रियों में परम बल, वापि-द्धि प्रणति तथा कान्ति को प्राप्त करता है। कुछ मुख्यरसायन निम्न है :—

(1) ब्रह्म रसायन :—पांचों पंचमूल, दरड़ और आंवले के मिश्रण से ये रसायन तैयार किया जाता है। इस रसायन को उतनी ही मात्रा में खानी चाहिए जिससे भूख न मारी जाये और इसका सेवन करने वाला यथाकाल पूर्ववत् आहार राशि का भोजन करें। साधारण मात्रा 1 तोला। इस रसायन के जीर्ण होने पर दूध के साथ सौठी का भात खाये।

कई तपस्वी लोग इस रसायन को पाकर दीर्घ आयु को पा चुके हैं। उन्होंने अपने इस जीर्ण शरीर को छोड़कर श्रेष्ठ तरुण वय को पाया था। इसके सेवन से उन तपस्वियों ने तन्द्रा क्लम और श्वास से रहित

Scanned by CamScanner

निरोग, मेधा, स्मृति और बल से युक्त होकर बहुत दिन तक समाधि में रहते हुए ब्रह्मचर्य का अत्यन्त निष्ठा से आचरण किया था। दीर्घायु को चाहने वाला इस ब्रह्म रसायन का प्रयोग करें।

(2) आमलकायस रसायन :—वशिष्ठ, कश्यप, भृगु और इसी प्रकार के अन्य महर्षियों ने इस रसायन का प्रयोग किया। वे श्रम व्याधि और जग से मुक्त होकर उनके प्रभाव से यथेच्छ तपक्षरण, करते रहे थे। पुराकाल में रसायनधान द्वारा महर्षि तय ब्रह्मचर्य ध्यान प्रशम आदि से युक्त रहते हुए अपरिमित काल तक आयु का उपभोग करते रहे हैं। इस अमलकाय रसायन को—जो सहस्त्र वर्ष की आयु को देने वाला है। जरा तथा रोगों तो शान्त करने वाला हैं। बुद्धि और इन्द्रियों में बल प्रदान करता है—ब्रह्म ने किया था।

(3) पिप्ली वर्धमान रसायन :—एक दिन में दस पिप्पलियों का दूध के साथ प्रयोग करें। इस प्रकार दस दिन तक क्रमशः प्रतिदिन दूध के साथ दस-दस बढ़ाती जाये। और पश्चात् क्रमशः प्रतिदिन दूध के साथ ही दस-दस घटाता जाय। इस प्रकार 1000 पिप्पलियों का प्रयोग करें। इसमें पिप्पलियों के बढ़ाने और घटाने के साथ-साथ सहपान व अनुयान आयु में प्रयुक्त होने वाले दूध की मात्रा को भी क्रमशः बढ़ाना और घटाना पड़ेगा। प्रति दिन जब ये जीर्ण हो जाय तब दूध औषधि के साथ साठी के भात का भोजन करना चाहिए।

दोष और रोगों को देखते हुए बलवान पुरुष को पीसकर सेवन करनी चाहिए और दुर्बल पुरुषों को पिप्पलियों का शीत कषाय पीना चाहिए। यह पिप्पलीवर्धमान रसायन प्राप्तिकर स्वर के लिए हितकर, आयुस्कर प्लीदोदर नाशक, वयास्थापक तथा मेधा के लिए हितकर है।

(4) त्रिफला रसायन :—पूर्व किये गए भोजन के जीर्ण होने हर प्रातःकाल एक दरड़ भोजन से पूर्व दो बेदड़े और भोजन के पश्चात् चार आंवले मधु और घी के साथ सेवन करे। तीनों द्रव्यों को ही कूटकर मधु और घी के साथ सेवन करना होता है। इस त्रिफला रसायन के एक वर्ष के प्रयोग से पुरुष पूरे सौ बरस तक जरा रहित एवं निरोग रहता है।

(5) इन्द्रोक्त रसायन :—उत्तम वीर्यवर्धक और आयुष्कर है। मन स्मृति देह अग्नि बुद्धि तथा इन्द्रियों को बल देता है। परम ओजस्कर है। वर्ण और स्वर को निर्मल करता है। विष और अलक्ष्मी को शान्त करता हैं। सब वाणियों का देने वाला है। कामना सिद्धि तरूणवय, प्रजापियता तथा लोक में कीर्ति चाहने वालों को इस ब्राह्म तथा उदारवीय रसायन का यथावत् सेवन करना चाहिए।

उपरोक्त सभी रसायन आपको अत्यन्त दीर्घ करने वाले जरा एवं रोगों के नाशक हैं। वीर्यवर्धक है।

Scanned by CamScanner

With Compliments from

CHEMIST
GUPTA BROTHERS
Pravish Marg, Railway Road,
Faridabad (Haryana)

Scanned by CamScanner

पारद और रसायन

डा. सी. बी पाराशर
उपाध्यक्ष
एमगा
क्लीनिक मेन मार्किट
फरीदाबाद

आधुनिक युग मे रसायन विज्ञान (Science of Chemistry) में अत्यधिक शोध्य कार्य हुआ है, किन्तु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि यह शोध कार्य प्राचीन रसायन विज्ञान के समक्ष कुछ भी नहीं है ।

हमारे ऋषि मुनि अपनी एक चुटकी भभूत के द्वारा मृत प्राय व्यक्ति को जीवित करने में पूर्णतया सक्षम के पारस पत्थर के द्वारा स्वर्ण निर्माण की कहानियाँ आज भी सुनने को मिलती है । पारद गुटिका धारण कर गायब होना, अन्तरिक्ष गमन करना, जल पर चलना आदि ऐसी बाते है जिन पर सोचना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व हो जाता है ।

पारा+रस अर्थात पारे का रस (भस्म) ही पारस पत्थर है जो प्रकृति में या तो स्वयं बन जाता है या बनाना पड़ता है । बर्मा में सोने वाले लखपति चाचा के नाम से आज भी एक व्यक्ति मौजूद है जो पारे को स्वर्ण में बदलने की क्रिया को जानते है । मार्कोपोलो ने 7 बार भारत की यात्रा की थी तथा यहां ऐसे साधू सन्यासियो से सम्पर्क स्थापित किया जिनकी आयु 400-500 वर्ष तक थी । इतनी अधिक आयु का रहस्य जानने पर मार्कपोलो को बताया गया कि वे लोग पारे तथा गन्धक से बनी रसायन का उपयोग करते है । आयुर्वेद के ग्रन्थों में पारे को शिव वीर्य तथा गन्धक को मां पार्वती जी के रज की संज्ञा दी हैं आज के वैज्ञानिक युग में भी वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है हमारे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के निर्माण में मूल कारण पारद व गन्धक ही है पारद जैसे पदार्थों के गुणों का बखान करना मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति के सामर्थ्य से बाहर ही है । फिर भी कुछ शास्त्रोक्त बातें सर्वसाधारण की जानकारी हेतु सुक्ष्म रूप में वर्णन की जा रही है ।

Scanned by CamScanner

शताश्वमेधेन कृतेन पुण्य,
गो कोटिभिः स्वर्ण सहस्त्र दानात् ।
नृणं भवेत्सतक दर्शनेन,
थत्सर्वतीथेषु कृताभिषेकात् ।।

अर्थात सौ अश्वमेघ यज्ञ करने से अथवा करोड़ों गायो को दान करने से या हजारो सुवर्ण दान करने से अथवा सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य होता है वह पुण्य मनुष्य को पारद के दर्शन करने से प्राप्त हो जाता है परन्तु यह बात केवल सिद्ध पारद पर ही लागू होती है साधारण पारद एक विष ही है ।

विद्याय रसलिङ्ग यो भक्तियुत्पः समर्चथेत् ।
जगन्त्रितय लिंगानां पूजा फलम् वाप्नुथात् ।।

अर्थात जो पुरुष पारद का शिवलिंग बनाकर भक्ति पूर्वक उसका पूजन करता है भूलोक भूवलोक और स्वलोक में स्थित सम्पूर्ण शिवलिंगों के पूजन करने का फल प्राप्त होता है यह बात भी केवल सिद्ध पारद पर ही लागू होती है ।

भक्षण, स्पर्शन, दान, ध्यानं च परिपूजनम् ।
पग्चछा रस पूजोत्मा महापात्तक नाशिनीं ।।

अर्थात पारद का सेवन करना, दान देना, उसका ध्यान करना पूजा करना, यह पांच प्रकार की पारद पूजा है जो महापात्त को (भयंकर रोगों या पापों) को नष्ट करने वाली है) पारद को सिद्ध करने के उपरांत वह अत्यतः सिद्धिदाता हो जाता है तथा पूर्व जन्म में किये गये पापो के परिणाम स्वरुप जो मनुष्य असाध्य रोग जैसे कुष्ट अथवा कैंसर आदि को भोगता है, सिद्ध पारद के स्पर्श अथवा सेवन मात्र से इन रोगों से मुक्त हो जाता है ।

हन्ति भक्षोण मात्रेरगः पूर्वाजन्माध सम्भवम् ।
रोग सङ्गसशेपाणा नराणां नात्रः संशयः ।।

अर्थात पारद के यथाविधि सेवन से मनुष्यों के पूर्व जन्म में किये गये पाप भी नष्ट हो जाते है । इसमें सन्देह नहीं है ।

अभ्तव्यं त्रुटिमात्र यो रसस्य परिजारयेत ।
शतक्रम तुफलम तस्य भवेदित्य द्रवीच्छिवेः ।।

Scanned by CamScanner

अर्थात जो मनुष्य पारद के साथ एक गद्दी (चुटकी) अन्तब्य जारणा (जीर्णा) करता है उसे 100 अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ऐसा शिवजी ने कहा है ।

> यस्य निन्दति सतेन्द्र शम्भोस्तेजः परात्परम् ।
> स पतेन्न के घोरे यावत्कल्पा विकल्प नम् ॥

अर्थात जो मनुष्य शिवजी के परम श्रेष्ट तो जो रूप (वीर्य रूप) पारद की निन्दा करता है वह कल्पान्त पर्यन्त घोर नरक (दुःख) में पड़ा रहता है ।

> सुर गुरू द्विज हिंसा पापब्य कलापों द्रवं किला साध्यम् ।
> श्विंग तदपि च शमयति यस्त स्मातः पवित्रतरः सूतात् ॥

अर्थात देवता, गुरू, गाय और ब्रह्मणों की हत्या करने से उत्पन्न पापों के समूह से उत्पन्न और स्वाभावतः असाध्न सफेद कोढ़ भी पारद के सेवन करने से नष्ट हो जाते है ।

> परमात्मनीव सततं भवति लयो यत्र सर्वसत्वानाम् ।
> एकोऽसौ हसराज शरीर अजरामर कुरूतें ॥

पारद में विविध उपायों से सम्पूर्ण तत्व (रस, उपरस, लौह) का लय उसी प्रकार हो जाता है जैसे परब्रह्मा परमात्मा का संसार के सभी प्राणियों में अतः औषाधियों में केवल पारद ही एक ऐसी वस्तु है जिनके सेवन से शरीर अजर अमर हो जाता है ।'

> प्रत्येक्षण, प्रमाणोनयों जानाति सूतकम ।
> अदृष्ट विग्रहं देवे कथं शास्यति चिन्मेयम ॥

अर्थात जो मनुष्य प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा अर्थात नेत्रों द्वारा दीखने वाले शरीर को अजर अमर बनाने वाले पारद को नहीं जानता वह शरीर इन्द्रीय सहित चिन्मय देव परब्रह्मा को किस प्रकार जान सकता है ।

> तस्माज्जीवन्मूक्ति समीह मानेन योगिना प्रथमम् ।
> दिव्य तनुर्विधेया हर गौरी सृष्टि संयोगात ॥

अर्थात जीवन मुक्ति की अभिलाषा रखने वाले योगी को सबसे पूर्व हर (शिव) गौरी (पार्वती) को सृष्टि "पारदं शिव वीर्यं च दुर्गा बीजं च गन्धकम् अर्थात पारद गन्धक के द्वारा अपने शरीर को दिव्य बनाना चाहिए ।

Scanned by CamScanner

रसायन और हिन्दी–साहित्य

डा. भारत भूषण शर्मा
बी. ए. एम. एस.
मार्किट नं. 5 फरीदाबाद N. I. T.

आचार्य सुश्रुत ने रसायन तन्त्र की परिभाषा करते हुये कहा है। कि "रसायन तन्त्र नाम वयः स्थापनमायुर्मेधा बलंकर रोग हरण समर्थञ्च" अर्थात रसायन तन्त्र वैधक शास्त्र का वह अंग है। जिसमें वयः स्थापन (सौ वर्ष तक आयु को निरविछिन्न रखना) आयुष्कर (आयु को बढ़ाना) बलकर (शक्तिशाली बनाना) रोगापहरण (रोग को सदा के लिये दूर रखना) जरापहरण (वृद्धावस्था को दूर कर बहुत काल तक तरुणावस्था में रखना) प्रभृति साधनों का उल्लेख पाया जाता है। औषधियों के रस, वीर्य विपाक, प्रभावों का आयु बल, वीर्य बलस्थैर्य के लिये प्रयुक्त करने की क्षमता को रसायन कहते है। अर्थात रसायन औषधियों अपने प्रभाव से बल, आयु, वीर्य वर्धन एवम् स्थिरता उत्पन्न करने वाली होती है। संक्षेप में जिस तन्त्र ज्ञान के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ रस, रक्तादि धातुओं को प्राप्त करता है वह रसायन होता है।

हिन्दी साहित्य में भक्ति रसायन, अमृत रसायन और आचारर रसायन का उल्लेख मिलता है।

भक्ति-रसायन

कबीर दास ने ईश्वर की भक्ति को रसायन के सदृश गुणकारी कहा है इस भक्ति रसायन का अनुपान सांसारिक यात्रा की भ्रांति को दूर करने वाला होता है राम की भक्ति रुपी रसायन की प्राप्ति अपने "अहं" को नष्ट करने पर ही होती है।

भक्ति-योग को काया-योग से श्रेष्ठ बताया जाता है। योगी ज्ञान और भक्ति की अमर बेल के रस धीरे धीरे पीता है। और इस रसायन से युग युगान्तर तक जीवित रहता हैं एवं इससे उसे अमरत्व की प्राप्ति होती है।

अमृत-रसायन

ब्रह्मरन्ध्र से टपकने वाला रस महारस है। और यह सर्वश्रेष्ठ रसायन हैं सुश्रुत सहिता में अमृत का उल्लेख आया हैं। पूर्व-काल में ब्रध्या आदि देवताओं ने जरा और मृत्यु को नष्ट करने के लिये सोम नामक अमृत का सृजन किया।

Scanned by CamScanner

कबीर दास ने ज्ञान रुपी गुड़, ध्यान रुपी महुवा से बने एवं सुषुम्ना नाड़ी से चुआये हुये रस को राम-रस, महारस इत्यादि नाम से कहा है। एवं इसका पान करने वाला व्यक्ति जरा एवं काल से निर्भय होकर अमर हो जाता है ।

कबीर दास ने 12 वर्ष तक बाल्यावस्था कही है। जो क्रीड़ा करते हुये व्यतीत हो जाती है। इसके पश्चात् 20 वर्ष तक किशोरावस्था एवं युवावस्था है। जब मनुष्य तेज प्राप्त कर नारी-संग में सुख प्राप्त करता है। 30 वर्ष तक प्रौढ़ावस्था है। इसके पश्चात् वृद्धावस्था आती है। इस अवस्था में सिर पैर एवं शरीर के सभी अंग कंपित होते रहते है। बाल भूरे होकर सफेद हो जाते है तथा शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है। ब्रह्मरन्ध्र से निकलने वाले अमृत रस का पान करने से मानव को जरा एवं मृत्यु नहीं प्राप्त होती।

रसायन सेवन से पूर्व शरीर को स्नेहन, अभ्यंग उद्वर्तन आदि से परिष्कृत कर लेना आवश्यक होता है। हिन्दी-साहित्य में उद्वर्तन विषयक विवरण यत्र-तत्र परिलक्षित है। इसका प्रयोग शरीर की प्रभा, कान्ति एवं सौन्दर्य वृद्धि के लिये होता है। कृष्ण राधा द्वारा केशर, कुम कुम इत्यादि का उबटंन लगाकर स्नान करने का वर्णन आता है। यह अंगों को स्थिर करने एवं त्वचा को निर्मल बनाने वाला है।

आचार-रसायन

सत्य बोलना, क्रोध न करना, मद्य सेवन एवं स्त्री सेवन से दूर रहना, अहिंसा करना, जप-तप एवं पवित्रता में विश्वास रखना, दान देना, देवता, गौ, ब्राह्मण की पूजा करना, समय से निद्रा एवं शैय्या त्याग उत्तम आचार-विचार आदि करने वाला मनुष्य सदा रसायन युक्त होता हैं।

केशव दास, तुलसी दास एवं सूरदास ने प्रातः काल शैय्या त्याग कर नित्य कर्म करने का उल्लेख किया है। अष्टांग हृदय में सभी को ब्रह्म मुहूर्त में उठने का निर्देश दिया गया है।

हिन्दी-साहित्य में चरक के समान ही मद्य-सेवन के निषेध का प्रतिपादन करते हुये कहा गया है। कि इसका पान करने वाला अपने देह कों सुध-बुध भूल जाता है। हिन्दी-साहित्य में आचार-रसायन के रूप में जप-तप, दान, दया इत्यादि को धर्म के अर्न्तगत ही मान लिया गया है। तथा आयुर्वेद में धर्म को आरोग्य का मूल साधन कहा गया है।

Scanned by CamScanner

S. D. JAIN CLINICAL LABORATORY

2542, Sector-16, Near (Singar Cinema)

Faridabad (Haryana)

Scanned by CamScanner

हरीतकी–दादी जी का अचूक नुस्खा

डा. डी. एस. राठी
शालीमार पार्क
शाहदरा

बचपन में जब कभी पेट में दर्द हो जाता तब हमारी दादी जी के मुख से निकलता 'हरड़ का जरा सा चूर्ण गर्म पानी से लो, - जादू मन्त्र की तरह दर्द खत्म हो जायेगा'। अक्सर यह नुस्खा अचूक साबित होता।

कभी हमें दादी जी के मुख से सुनने में आता 'साबुत हरड़ तवे पर भून कर प्रतिदिन एक हरड़ खाने से डाक्टर के पास नहीं जाना पड़ेगा'। कहने का अर्थ मात्र इतना है कि हमारे बुजुर्गों में 'आयुर्वेद' शब्द का स्थान 'देशी जड़ी-बूटी' के नाम से बहुत पहले से प्रचलित रहा हैं। शिक्षा के अभाव में भी वह हरड़ के गुण व कर्म से परिचित रहे हैं। हरीतकी सस्ती व सुलभ भैषज है।

हरीतकी और आंवला दोनों रसायन द्रव्य है। आचार्य चरक ने हरीतकी को प्राथमिकता दी है, क्योंकि हरीतकी में रोगों की चिकित्सा करने की क्षमता आंवले से अधिक है। इसलिये यह आयुर्वेद में महत्व पूर्ण रसायन द्रव्य है।

आंवला रसायन द्रव्यों में श्रेष्ठ है, किन्तु रोग नाशक में श्रेष्ठ नहीं है। हरीतकी का प्रयोग रोगों में प्रतिदिन किया जाता है। आइये, हरीतकी पर हमारे ग्रन्थ क्या कहते हैं ?

हरीतकी के गुण :—

लवण रस के अतिरिक्त पांचो रस होते हैं, यह उष्ण वीर्य है और दोषों का अनुलोमन करती हैं। लघु, दीपन और पाचन करने वाली हरीतकी कल्याणप्रद, वयः स्थापक और पुष्टिकारक है।

Scanned by CamScanner

हरीतकी असेवनीय पुरूष :—

अजीर्ण रोगों, अधिक मदिरा व अधिक मैथुन से कृशित शरीर, भूख प्यास और गर्मी से पीड़ित व्यक्तियों को असेवनी मानी है।

हरीतकी भेद :—

निघण्टु के अनुसार विजया, रोहिणी, अमृतादि सात भेद किए हैं।

हरीतकी का प्रयोग :

हरीतकी के बीज रहित फल का प्रयोग कर्मों के अनुसार अमृत–तुल्य होता है। कच्ची हरड़ व भुनकर दोनों तरीकों से खाई जा सकती है।

किन-किन रोगों में उपयोगी हैं :—

हरीतकी विशेषकर कुष्ठ रोग, गुल्म, उदावर्त, यक्ष्मा, पाण्डुरोग, अर्श, ग्रहणी रोग, जीर्ण-विषम ज्वर हृदय रोग, शिरोरोग, अतिसार, स्वर-भेद, कामला रोग, क्रिमीरोग, तमक श्वास, नपुंसकता, अंग-अवसाद व गुरूता और विबन्ध आदि रोगों को शीघ्रता से दूर करती है।

हरीतकी के विशेष योग :

1. त्रिफला-नित्य सेवनीय रसायन। यह हरड़ बहेड़ा और आंवला सम भाग लेकर पीस लें। यह तीन रसायन द्रव्यों का सम्मिश्रण बहुत उपयोगी है।
2. अंजीर्ण और पाचन क्रिया-हरीतकी का चूर्ण 3 ग्राम देशी खांड 3 ग्राम मिलाकर खाने के बाद लें।
3. खुनी बवासीर—हरीतकी चूर्ण एक चम्मच दिन में तीन बार दूध से लेना चाहिए।
4. कब्ज—सनाय 6 ग्राम, हरड़ 3 ग्राम दिन में तीन बार गर्म पानी से लें। या
   पिप्पली, हरड़ समभाग, गुड़ आवश्यकतानुसार रात को सोते समय 1 चम्मच गर्म पानी से लें।
5. रसायन सेवनीय पुरूष-हरड़ का चूर्ण, सेंधा नमक, आंवला, गुड़, मीठा वच, वायविडग, हरिद्रा, पीपर, सोंठ समभाग, 10 ग्राम की मात्रा में गर्म जल से लेना चाहिए।
   अन्त में स्वस्थ शरीर, दीर्घायु प्राप्त करने का एक उत्तम रसायन है—हरीतकी सेवन।

Scanned by CamScanner

Cinchona Officinalis as a Tonic

This remedy is used by both schools of medicine for conditions of great weakness and debility, The old school as they always do, prescribe it for all cases of debility, on general principles, under the name of Tonic.

It remained for Homoeopathy to indicate its exact place here.

Hahnemann expresses it: "Debility and and other complaints after loss of blood or other fluids, particularly by nursing or salivation, bleeding, cupping etc. or leucorrhoea, seminal emissions etc.

If the depletion has been sudden, as from a haemorrhage from the womb, lungs, bowels or nose, there will be faintness, loss of sight, ringing in the ears etc. For this state of things we have a "Friend indeed" in china and it should be given in frequently repeated doses, not too low, until reaction is established, then at longer intervals, as occasion demands.

If the debility is the effect of a slow and long continued prominent symptoms are Pale. Sallow face, sunken eyes with dark rings around, throbbing headaches, night sweats and sweats easily on least motion or labor.

Dr Promila. Dhamija
SICR (Bomb.) DHMC (N.H.M.C.)
Panel : Indian Air lines
German Language
Certificate Holder
Dhamija Mepical Centre
7/33 Vishwas Nagar
Yudhister Street, Delhi

Scanned by CamScanner

MOTHER & CHILD NURSING HOME

No. 66, Sector-21-B, (Near Lake Badkhal)

Haryana - 121 001

Dedicated to Total Care of
Women, Children and New born Babies

Consultant Obstetrican & Gynaecologist

Dr. (Mrs.) Arun Prabha Jain

M.B.B S., D.R.C.O.G. (U.K.)
National Board of Examinations
(Obstetrics & Gynaecolgy)

Consultant Pediatrican & Neonatolo

D r. Girish C. Ja

M.B.B.S., D.C.H. (U.
American Bo
(Pediatrics) F.A.A.P. (U.S.

Telephone Nos. : 21-6485, 21-6500 and 21-8130

Scanned by CamScanner

Is Tonic A Must– Homoeopathic View

Dr. A.K. Gupta

D.H.M.S. (Dli); M.I.H.L. (Geneva)

M.G.N. (Med.) P.H., P.G. (London)

Homoeophathic Consultant

J-158, Rajouri Garden, New Delhi-110027.

Ph. :501989, 5433432.

Very often I wonder when people keep asking for some tonic or the other for the growth of their children or the patient of theirs just in routine. As they are made to believe that tonics are the only thing which would make their children and patients become healtheir. Is it really true ?

Tonic which means something to tone up, or which tends to restore bodily tone has become a household term, among children, adults, men, women from all walks of life. As this is a special feature on tonics, I wish to put few points regarding need and use of tonics in general. Homoepathy believes in treating the sick person in totality. Still on persistent demand from patients and their attendents Homoeopathic Pharmaceutical Companies also has brought few homoeopathic tonics realising the commercial need of it. As such if the homoeopathic remedy is being prescribed on the principles of Homoeopathy then certainly the need of tonic becomes bit superfluous to some extent.

Tonic is used basically for the restoration of bodily tone, but very oftenly used such kind of tonics give a feeling of little

Scanned by CamScanner

betterment, but after use of some period the effect does not remain very much perceptible. Or we can say since the cause of the sickness is not properly treated, this superficial and supplimentaryhelp does not go very deep into the system and hence the effect is not very long lasting. So is it not better to treat the basic cause of the problem? As Louis Pasteur and Claude Bernard, two medical giants of the ninteenth century questioned all through their lives whether the most important factor in case of a disease was the 'Soil'- the human body or the 'Germ'. On his death bed Paster admitted that Bernard had been right, declairing that it is the 'Soil'.

Though tonics may be needed at the period of convalscence or for the person whose diet is deficient of various essential elements, so that the body vitality is boosted up for a while to develop and regain its own defensive mechanism. But for normal person whose diet is also well balanced and full of nutritive requirement, if he still has the sign and symptoms of some deficiency, in that case the suppliment tonics are going to be very helpfull for a long time, since the problem lies in the absorption and assimilation of those elements from the food, which under normal conditions body system should be absorbing and doing proper metabolisation from the food. In this case supplimenting the elements through tonics may prove rather not very helpfull untill and unless the system is being corrected for the proper absorption and metabolisation. Once the absorption is restarted towards normalcy then there would be no signs and symptoms of the deficieny would be visible after some time. Hence correcting the system would be more advisable with proper remedies rather feeding the required quantity of essential elements in the form of tonics and making the system more dependent in those artificial quantitative form of tonics.

Scanned by CamScanner

Nevertheless as and when tonics are prescribed homoeopathy also has got few good tonics to offer. Whereas the very correct and precise constitutional homoeopathic remedy for the individual patient is the best tonic for overall improvement in the economy of health for the particular patient. With the appropriate homoeopathic remedy patient feels better both at physical and mental levels. Once the feeling of hope and anticipation are generated the organism translates this into biological processes that begin to restore the balance and revitalise the immune system, using the same pathways that were used in the development of the illness. As hope, is physiological, unfortunately hope and love are two quite neglected remedies. If hope and love both are given along with the treatment, it can definitely bring better results.

The most popular and widely acclaimed homoeopathic tonic is Alfa. ALFA-ALFA as a remedy alone favourably influences, nutrition, evidenced in 'toning up' the appetite and digestion resulting in greatly improved mental and physical vigour, with gain in weight. Disorders characterised by Mal-Nutrition are mainly within its therapeutic range, for example Neurasthenia, Nervousness, Insomnia, Nervous Indigestion etc. It also acts as Fat producer, Corrects tissue waste. It also Increases quality and quantity of milk in nursing mothers. Its pronounced urinary action suggests it clinicaly in Diabetese Insipidus and Phosphaturia. It is claimed to allay vesical irritability of Prostatic Hypertrophy. The rheumatic diathesis seems especially amenable to its action.

On commercial basis pharmaceutical companies add few more medicines of other therapeutic use in combination and make their special tonics. The commonly used medicines in the combinations are, Avena Sativa, Hydrastis, China, Nux Vomica, Acid Phos and Kali Ars etc and make it usefull for vorious conditions.

Scanned by CamScanner

शुभ कामनाओं सहित :

फरीदाबाद में शराब छुड़ायें

शराबी को लाने या बताने की जरूरत नहीं।

कृपया डाक्टर साहिबान भी सम्पर्क करें।

घेंघा रोग (गर्दन मोटी हो जाना) के रोगी भी मिलें।

सम्पर्क करें :—

गर्ग एक्सरे

डा० एस० पी० गर्ग

तिकोना पार्क फरीदाबाद, फोन : 287005

With best compliments from :

Garg X-Ray & Laboratory

SHOP NO. 2, TIKONA PARK, FARIDABAD.

BRANCH :

Dolly X-Ray & Laboratory

910, SECTOR-16, FARIDABAD

25 साल से मरीजों की बेहतर सेवा—

Dr. S. P. GARG

Phone : 287005

Scanned by CamScanner

Phosphoric acid as a tonic

It is an invaluable remedy well deserving the name 'nerve tonic' says Dr. Hughes in his Pharmacodynamics it has marked debility and Prostration.

It acts on brain, nerves, blood, kidneys, mucous membrane, Sex organs and bones.

It helps in both mental and Physical debility. The remedy runs from mental to Physical, From brain to muscles.

It also helps in haemorrhages and inflammation to bones.

It is best Suited to Persons of originally Strong Constitution, who have become debilitated by loss of vital Fluids, Sexiual excess, Violent acute diseases, Chagrin or a long succession of moral emotion, grief, Care or disappointed affection. Pale, Sickly Complexion, eyes sunken and surrounded by blue margins.

The Patient is sad abashed and despair of cure.

In short great debility is the key note symptom it can be with involuntary stools or with frequent & profuse emissions several times in one night, even after coitus.

Dr. Narinder Kumar Dhamija
BSC (Medical) DHMS (LHMC)
Dhamija Medical Centre
7/33 Vishwas Nagar
Yudhister Street
Shahdra. Delhi-110032

Scanned by CamScanner

With best compliments

from :

Products at a Glance

ADEN — FURAIDO — FACOL — PYRET — GABEX — UNIFOL

—HEXINATE — MICON — KOSY — AMETIC — UNIGEL

—GIAROBIC — PECOLD — U-KLOR — GUFEN — UINIBEX

—COMPOUND

—ANALGESTIC — SONTRAN — FEROS — TYSON

—ANALGESTIC — SONDRIL — SONALGESTIC

UNISON
PHARMACEUTICALS
3026/B, Ranjit Nagar, NEW DELHI-110008

Scanned by CamScanner

With best compliments
from :

Vikas Ultra Sound Scan Centre

C-55, PREET VIHAR, VIKAS MARG, DELHI-110092

Facilities available :

- Routine Examinations
- Sonography of Thyriod, Breast, Scrotum, Prostate and Cranium of new born.
- Echocardiography
- Ultrasound guided Interventional Procedures viz. FNAC, Thoracentesis, Abscess drainage etc.
- Only Centre in India doing Foetal Sex Determination at Three Months of Gestation by Ultra sound examination only.

Written Hundred per cent Accurate Reports.

DR. TEJINDER SINGH DHILLON
CHIEF ULTRA SONOLOGIST
FORMERLY PROF. OF RADIOLOGY
MEDICAL COLLEGE, AMRITSAR.

DR. B. K. SHARMA
DMRD., M. D.
CONSULTANT SONOLOGIST

With best compliments from :

Faridabad Diagnostic Centre

(PATHOLOGY LAB)
H. No. 2, Sector-8, Faridabad

Collection Centre :
143/7A, YMCA, Road, Faridabad

EQUIPPED WITH ALL MODERN LAB TESTING FACILITIES

—Haematology —Biochemistry — Histopathology
—Microbiology —Hormonal Assays —Any Special Investigation

Dr. B. C. GUPTA
M. D. (PATH)
Clinical Pathologist

Scanned by CamScanner

STAD CHEM OF INDIA

68, D. L. F. Ind. Area,

14 Milestone, Mathura Road

Faridabad (Haryana)

Pin~121003

Scanned by CamScanner

STEPAN

Laboratories Pvt. Ltd.

Pharmaceutical Manufacturers and Exporters of Quality Medicines.

Offers :

TRIOLE

(Dependable Choice For Day-to-Day Infections)

IBUPAN PLUS

(Puts Pain and Inflammation to Rest)

PROTOPAN SYRUP

(A Food Supplement with Vitamins & Minerals for better patient acceptance)

CALI-B-TONE SYRUP

(Meets increased Nutritional Demand)

CRYSTONE

(Offers Therapeutical Dose of B-Complex Vitamins)

Wanted Propaganda Distributors For Unrepresented Area

Stepan Pharma Marketing

MARKETING OFFICE (SALES ORGANISER)

452/16, Bhushan Bhawan, Ring Road, Flyover, Azadpur, Delhi-110033.

Phone : 7110996

FACTORY :

20-Bhalaswa, Delhi-110 042.

Phone : 7126974.

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

Dr. Mahesh Nagpal

B.D.S. MAMC (DELHI) MSO (USA) MFDI (UK)
Phone : 2216552

DENTAL SURGEON

CLINIC : C-65A. East Krishan Nagar, Adj. Shri Ram Singh Hospital Main Swarn Cinema Road, Delhi-110051
Timings : 10.00 a.m. to 12-30 p.m. & 6·00 to 8-30 p.m.
RESI-CUM-CLINIC : C-524, Yojana Vihar, Near Mahila College, Vivek Vihar, Delhi-110 092
Timings : 8-00 a.m. to 10-00 a.m. 4-00 p.m. 6-00 p.m.
(Sunday Evening Closed)

FACILITIES :

● Dental X-Ray ● Braces Treatment ● Cosmetic Filling
● Crown & Bridge ● Rct. Scaling ● Facial Fracture.

With best compliments from :

Dr. R. K. GUPTA

M.B.B.S. M.S. (Ortho)
Consultant Orthopaedic Surgeon
East Delhi Orthopaedic Centre
H-3/12 Vijay Chowk Krishna Nagar, Delhi-51
10 A. M. to 1 P. M. & 6. P. M. to 9 P. M.
(Equipped with X-ray, Emergency 24 hrs.)

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM :

CFL PHARMACEUTICALS LTD.

Makers of :
MYCOCIN CAPS

Scanned by CamScanner

With best compliment from :

SHILPACHEM

MANUFACTURERS OF PHARMACEUTICAL PRODUCTS

47, D. Industrial Estate fort Indore 452006

Some of our Prestigious Products are :

1. Shilpa Fort Capsules
   (Induce Thereapautic Abortion)
2. Motizara Capsules
   (For Typhoid Fever)
3. Dast Band Capsules
   (Anti Amoebic)
4. Pachan Sudha Tablet
   (Enzyme Tablet)
5. Sunila Fort Tablet
   Antiseptic & Antialer
6. Ashoka Cordial/Corm-I
   (Uterine Tonic)
7. BalvarDhan Syrup
   (General Tonic)
8. Livobell Drops/Syrup
   (Liver Tonic)
9. Shilpa Cough Syrup
10. Stoline Tablet
    (for Stone)

Stokist/Distributor
Medicine Traders
405, Sector 16,
Faridabad 120001
Ph. 239667

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM :

POOJA

TRAUMA & FRACTURE CLINIC

18-A/106, I.T.I. Road, Old Faridabad

Phone : Resi. : 283548
Clinic : 277910

Dr. HARISH HANDA

M.B.B.S., D. Ortho, M.S. (Orthopaedics)

हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

Treatment is available for all type of injuries, fracture, bone and joint disease. Operation done by latest A. O. (Switzerland) Technique

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From :-

VEDANT REMEDIES PVT. LTD.

66, Laghu Udyog Nagar,

G. T. Karnal Road,

Delhi-100 033

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM :

VIKAS PHARMA

Manufactuers of :

PATENT AYURVEDIC MEDICINES

Loni Road Shahdara, Delhi-110032

PHONE : 2284044

Branch :

A-6, Surya Nagar, Ghaziabad

PHONE : 863572

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

CARE & CURE

SECTOR-7, POCKET D-15, FLAT NO. 57
ROHINI DELHI-85
Tel : 7277569, 7272222

Facilities available :

* Indoor facilities
* Intensive Care Unit (ICU)
* Laboratory
* Ultrasound
* ECG
* Holter monitering (24 hours ambulatery ECG)
* Pulmonary Function Tests
* Nebulizer therapy for asthmatic patients
* Consultation in all specialities

Dr. Pankaj Aneja
M.B.B.S., M.D. (Medicine)
Consultant Physician & Cardiologist
Formerly at :
Escorts Heart Institute & Research Centre
New Delhi

Dr. Kavita Aneja
M.B.B.S., M D. (Radiology)
Consultant Radiologist & Ultrasonologist

Please Visit :

M/s. GARG MEDICINE CENTRE

AND

BRAHAMA NAND BABU NAND

CENTRE OF ALL KINDS OF AYURVEDIC & DESI MEDICINES

4, Jind Road, Near Shyam Baba Mandir Hansi
Hisar (Haryana)

Please Visit :

HARI MEDICAL HALL

197-A Red Esquire Market, Hisar

CENTRE OF ALL TYPES OF ALLOPATHIC,
PATENT & AYURVEDIC MEDICINES

Thanks

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

A. K. MEDICAL & MATERNITY CENTRE

504, Chamelian Road, Near Idgah.
Delhi-110006
Tel. : 527272, 773040

Facilities available :

— **Operations**
— **Indoor facilities**
— **Delivery**
— **Vaccination**
— **Family Planning**
— **Physiotherapy**
— **Laboratory**
— **Ultrasound**
— **E. C. G.**
— **M. T. P.**
— **Trans Urethral Resection**
— **Cystoscopy**
— **G. I. Endoscopy**
— **Early cancer Detection**
— **Consultation in all specialities**
— **X-Ray**
— **Laproscopy**

Consultation Hsr.—4 to 7 P.M.

Dr. A. Khalique
M.B.B.S., M.S. (Surgery)
F.E.U.L. Urology (W. Germany)
Consultant Surgeon & Urologist

EMERGENCY & AMBULANCE FACILITIES AVAILABLE 24 HOURS

Scanned by CamScanner

For Homoeopathic & Biochemic Medicines

Visit :

Karol Bagh Homoeo Pharmacy

Phone : 525322

(Dr. Kundan Lal Building)

Flat No. 26, Desh Bandhu Gupta Market,

Ajmal Khan Road, Karol Bagh, New Delhi-5

Company's Authorised Dealer's Show Room For

BECK & KOLL LAB. PVT. LTD., BOMBAY

Sole Distributr in Trans-Yamuna Area (Shahdra) of :

—Sidhi Pharmacy (Ayurvedic injections)

—Kruzer Herbals (Tablets & Capsules)

—Globe Pharma (Ayurvedic Capsules)

—Trishuil Pharmaceuticals (Cough Syrup)

K. R & SONS

E-70B, Dilshad Garden Delhi–110095

Message : 229 25 38/ Code 142

Note : If our M.R. did not approach to you and you are interested in our products please inform us.

Poineer Manufacturer of :

AYURVEDIC INJECTIONS

Sidhi Pharmacy Pvt. Ltd.

8, Civil lines, Lalitpur (U P.)

Some very effective injections are :

(i) Inj. Arjun (High B P., Low B.P & Ischamic Heart Disease) Result within 20 minutes 99% sure

(ii) Inj Arshon (Any type of Bleeding)

(ii) Inj. Gandhak (Skin Diseases)

(iv) Inj. Khujleena (Skin Diseases)

(v) Inj. Sundri (Lucorrhea, irregular menses. Bleeding etc.

(vi) Inj. Batoan (Rheumatic Arthritis)

(vii) Inj. Makardhwaj & Basant Kusumakar etc (For sexual disease etc.)

(viii) Inj. malarian & Jawreena etc. (For virul & malaria fever)

Delhi office :
4327/3. Ansari Road,
Daryaganj, Delhi-110006
Phone : 3279075, 654983,

Distributer—Trans Yamuna Area (Shahdra)
E-70B, Dilshad Garden, Delhi-110095
Message : 2292538/Code-142

Note : If our M.R. did not approach to you and you are interested in our products please inform us.

Scanned by CamScanner

GOEL PATHOLOGY LABORATORY

K. C. Road, Shop No. 70

4~5 Chowk

N. I. T. Faridabad

Scanned by CamScanner

With best compliments

from :

Central Diagnostic Laboratory

N. K. AGGARWAL
M. Sc. (Path)

Using Compurterised Technique for Better health Service.

Branch :
At 1st Floor Above Heera Medicos
Main Market, Old Faridabad
8-00 A. M. TO 1-30 P. M.
5-00 P. M. TO 8-00 P. M.

Main :
At House No. 2644, Sector-16,
Opp Laxmi Narayan Mandir, Faridabad
8-00 A. M. TO 12-00 Noon
5-00 P.M. TO 7-00 P.M. Phone : 281741

शुभकामनाओं सहित :

अंग्रेजी व देशी दवाइयों के थोक विक्रेता

सन्दीप मैडिकोज

C-1181, जहांगीर पुरी, दिल्ली-110033

GIVE YOUR BRAIN IT'S DUE

DIMAGHEEN

The Brain Nourishing Tonic

Especially for students
and
mentally busy people

DAWAKHANA TIBBIYA COLLEGE,
ALIGARH

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

R. K. Nursing Home

All Nursing Facilities Available Here.

Glyco Pharmaceuticals

MOHNA ROAD BALLABGARH

Specialist for :

Lyka Labs Ltd., Ranbaxy Laboratoris Ltd., Fulford India Ltd., Ledarle, Franco Indian Pharmaceuticals Ltd., Aristo Pharmaceuticals Ltd., Albert David Ltd., Blue Cross Laboratories Ltd., Plethico, Synthico Formulations, SOPL, Sol Pharmaceuticals Ltd., Systopic Laboratories, T. D. P. L.

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM :

GOLDEN LABORATORIES

Allways Use :

—Syp Netoliv in Liver Disorder
—Syp Negesto in Gas Related & Digestive
—Syp Neto Cough in Acute, Chronic Dry or Wet Cough.
—Syp D—Syntrox in Diarrhoea & Dysentry
—Syp G-80, A Best General Health & Nervine Tonic
—Syp U. T.-II— Passes Stone & Alkaliser.
—Syp Raktasafa—Skin Disorder, Pimples of Face Beauty, fungi & Every Skin Allergy.
—Syp Golden Cough. Expectorent—Acute & Chronic Irritable Cough, Bronchitis, Asthma.

Factory :
Plot No. 223, K. N. 299
Mukhmel Pur
Delhi-36

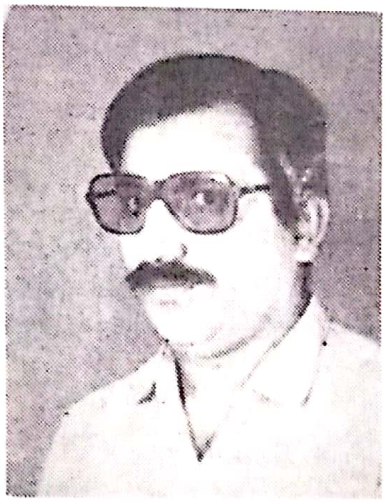

डॉ० विजय जिन्दल
संस्थापक एवं प्रबन्धक
गोल्डन लैबोरेटरीज
Dr. JINDAL CLINIC & MATERNITY HOME
A-1009, Jhangir Puri
Delhi. Ph. : 7222558

Scanned by CamScanner

With Compliments from

Coper Tee, Mala-N & All Vaccine's are Free Available Here for all A. I. I. M. G. A. members.

By

A. I. I. M. G. A. Depot

Sub Depot. :
Dr. N. K. DHEMIZA
7/33, Vishwas Nagar, Yudister Street
Shahdra, Delhi–110032
Phone : 2211789

Head Office :
Dr. VIJAY JINDAL
A-1009, Jhangir Puri,
Delhi - 110033
Phone : 7222558

Scanned by CamScanner

List of Life Members AIIMGA

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
1.	SA001	Dr. Ajay Luthra GH-8/653, Paschim Vihar New Delhi.	R. 5587876 C. 5580491
2.	SA002	Dr. (Mrs.) Anju Shree Mangla S-4, Old Mahavir Nagar Tilak Nagar, New Delhi.	
3.	SA003	Dr. (Mrs.) Anu Radha Bhargava 77 Basant Village, New Delhi-57	R. 6875394 C. 6875948
4.	SA004	Dr. (Mrs.) Anu Radha Gupta D-984 Firoj Gandhi Nagar Dauba Colony NIT Faridabad (Haryana)	
5.	SA005	Dr. Azad Kumar Sec, 5/B-7/191 Rohini Delhi-85.	
6.	SA006	Dr. Ahsan Ali Khan F-361 Mangolpuri Delhi-83.	
7.	SA007	Dr. Abdul Rehman E-119 Mangolpuri, Delhi-83	
8.	SA008	Dr. Amtul Usman P-1/73 & P. Masjeed Camp, Mangolpuri Delhi-83	
9.	SA009	Dr. Miss Anju Heera Bhandari Medical Centre East Azad Nagar Shahdra Delhi.	
10.	SB002	Dr. B. D. Joshi 1/17 Dakshinpuri, New Delhi-62.	R. 6452278 C. 6468606

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
11.	SC003	Dr. C. B Parashar Main Market Faridabad Old, (Haryana)	C. 277522
12.	SD001	Dr. D. D. Semwal Kanchan X-Ray & Nursing Home Y-46-47, Sultanpuri Road, Nangloi Delhi-41	R. 5471630 C. 5471864 5471025
13.	SD002	Dr. D. B. N. Kundra B-1/444, Ashok Vihar Phase II, Delhi.	R. 7225272 C. 7222367
14.	SD003	Dr. D. R. Dixit 51, Aram Park, Delhi-51	2245069
15.	SD004	Dr. Dhiraj Singh Gaur Vill. & P. O. Bisahara, Distt. Ghaziabad (U.P.)	
16.	SD005	Dr. Darshan Singh Dahiya, E-500, Jahangeerpuri Delhi-33.	7226719
17.	SD0017	Dr. D. D. Sharma, 76 Sandesh Vihar P & T Colony, Delhi-34.	212664
18.	SH009	Dr. Hari Shanker Dev Sharma Jeewan Clinic Fatehpur Chandela Faridabad (Haryana)	8-218171
19.	SI001	Dr. I. P. Singh 1/10784 Subhash Park, Naveen Shahdra, Delhi-31.	2292380
20.	SJ001	Dr. J. S. Panwar 2266/2, Khampur Opp. West Patel Ngr. New Delhi-110008.	5701831
21.	SJ002	Dr. J. M. Nasir E-Block Moti Masjeed, Jahangeerpuri, Delhi-33,	7231080
22.	SJ003	Dr. Jai Chand Sharma Shanti Nursing Home Naveen Shahdra Delhi.	R. 2284301 2293135 C. 2283499 2284372

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
23.	SK001	Dr. (Mrs.) Kamleshwari Saxena I-673 Mangolpuri, Delhi-83	
24.	SK002	Dr. K. M. Jakir I-1460 Jahangeerpuri,Delhi-33.	
25.	SK008	Dr. K. S. Rana W. Z. 485/12 Basai Darapur, N. Delhi-15.	5411083
26.	SM001	Dr. M. S. Yadav 19-A Shastri Park Krishna Nagar, Delhi-51	2205663
27.	SM002	Dr. Munish Gulati C-1501 Jahangeerpuri, Delhi-33.	C. 7223395 R. 7241359
28.	SM003	Dr. Mahesh Gaur Capital Laboratory Krishna Nagar Delhi-51.	2213662
29.	SM004	Dr. (Mrs.) Madhu Arora 506 Parma Nand Colony, Delhi-9.	7111333
30.	SM005	Dr. Mhd. Usman P-1/73 & P. Block, Masjeed Camp Mangolpuri, Delhi-83.	
31.	SM006	Dr. Madan Lal Sharma B-606 Brij Vihar, Ghaziabad (U.P.)	868188
32.	SM009	Dr. (Mrs.) Meenakshi Sharma Holy Hospital, Nalanda Chowk, Mandawali (Main Rd.), Delhi-92.	2211942
33.	SM016	Dr. M. L. Ahuja Navjeevan Poly Clinic main Bazar, Faridabad old, (Haryana).	8-276697
34.	SN001	Dr. Navneet Arora 506 Parmanand Colony, Delhi-9	7111333
35.	SN002	Dr. N. K. Mudgal F-13 Dayalpur, Delhi-94.	2283042

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
36.	SN003	Dr. Navnish Bhatnagar J-44-45, Block Market Jahangeerpuri, Delhi-33.	7120871
37.	SN004	Dr. N. K. Dhamija 7/33 Yudhister Gali Vishwas Nagar, Delhi-32.	2211789
38.	SN006	Dr. Narender Goyal 2161 Sec. 16, Faridabad-121001 (Haryana)	8285185
39.	SN013	Dr. (Mrs.) Nirmala Chikara Gautam Hospital 2-Kohat Enclave Pritam Pura' Delhi-34,	7188810
40.	SO001	Dr. O. P. Vashisth W. Z. 142 Ring Road, Naraina, New Delhi-28	5414289 5415076
41.	SO002	Dr. O. P. Sharma K-5/28 Ghonda West Shahdra, Delhi	2282644
42.	SP001	Dr. P. K. Sharma C-523 Awantika Rohini, Delhi-85.	R, 7223502 C. 7273548
43.	SP005	Dr. (Mrs.) Promila Dhamija 7/33 Vishwas Nagar, Yudhister Street Shahdra, Delhi-32.	2211789
44.	SR001	Dr. R. S. Chauhan 292, Main Road Mandawali, Delhi-92	R. 2247601 C. 2210230
45.	SR002	Dr. Rajendra Chhabra 327, Shalimar Village, Delhi.	R. 7275719 C. 7273464
46.	SR003	Dr. R. K. Goyal D-26, Sanjay Market Mangolpuri Delhi-83.	R. 7275719 C. 7273464
47.	SR004	Dr. (Mrs.) Renuka Gupta 232, Sarai Pipalthala, Delhi-33.	7213741

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
48.	SR005	Dr. Miss Raj Mitra Mitra Clinic, R-Z. 29, Block A, Nand Ram Park Uttam Nagar, New Delhi-59.	
49.	SR006	Dr. Rishi Pal Panwar B-618, Shahbad Daulatpur Colony Delhi	
50.	SR007	Dr. Raj Shri Singla Singh Health Centre E-133 Patparganj, Delhi-92	
51.	SR008	Dr. Rakesh Kumar Sharma B-42, Madhu Vihar, Delhi-92	
52.	SR009	Dr. Raman Handa F-51, Madhu Vihar, Delhi-92.	R. 2247568 C. 2214039
53.	SR010	Dr R. P. Panchal G. 855, Shakurpur J. J. Colony Delhi-34.	R. 7225064 C. 7186838
54.	SR011	Dr. R. R. Tripathi K-1/58, Jahangeerpuri, Delhi-33.	
55.	SR012	Dr. (Mrs.) Raman Sharma D-2, Pandav Nagar, Delhi-92.	2243943
56.	SR014	Dr. Rakesh Kumar Gupta A-201, Main Market Mangolpuri Delhi-83.	7275069
57.	SS001	Dr. Sanjeev Bhargava 77 Basant Village, New Delhi-57	R. 6875394 C. 6875948 (Gurgaon) R. 20049
58.	SS002	Dr. S. P. Pandey K-716, Jahangeepur, Delhi-33	R. 7112289 C. 7225728
59.	SS003	Dr. Shrikant Sharma 4/1896 Rama Block BNN, Delhi-32	2208220
60.	SS004	Dr. S. C. Paliwal E-77, Mangolpuri, Delhi-83,	6876120
61.	SS005	Dr. Santosh Kumar Sharma 166 Village Karkarduma, Delhi-92	2211122 P.P.

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
62.	SS006	Dr. S. P. Pandey I-551 Jahangeerpuri, Delhi-33	R. 7214052 C. 7211458
63.	SS007	S. P Gupta F-2/285 Sultanpuri Road Delhi-41	5472868
64,	SS008	Dr. Sudev Singh Singh Health Clinic 594 Gali Bhutonwali Nangloi, Delhi-41.	5471034
65.	SS009	Dr. Suresh Chand Aggarwal 1272 Kashmiri Gate, Delhi-6	R. 2911588 C. 2523363
66.	SS010	Dr. S. K. Mangla S-4, Old Mahavir Nagar, Tilak Nagar, N. Delhi-18.	5439393
67.	SS011	Dr. (Mrs.) Sushma Rana R-583-84 Mangolpuri, Delhi-83.	7271495
68.	SS012	Dr. Miss Shashi Bala 72 CSP Flats East of Kailash, N. Delhi.	6844799
69.	SS013	Dr. Miss Simmi Dutta 786 Sec. 9, Faridabad (Haryana)	826944
70.	SS014	Dr. (Mrs.) Sudha Bhatti C-7 Shastrl Park Seelampur, Delhi-53.	
71.	SS015	Dr. (Mrs.) Santosh Kumar SP 42, Pritampura Morya Enclave, Delhi-34.	
72.	SS016	Dr. (Mrs.) Sarla C-44/245, Gandhi Ext. Bhajanpura, Delhi-53.	
73.	SS017	Dr. (Mrs.) Surbhi Saxena B-2-/89 Janakpuri Delhi-58.	
74.	SS018	Dr. Suresh Kumar Kochar 9536 Bagh Raogi Kishan Ganj, Delhi-7	R. 517368 C. 516629
75.	SS019	Dr. (Mrs.) Sangeeta Gera D-147, Vivek Vihar, Delhi-95	R. 2202603 C. 2204576

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
76.	SS020	Dr. Surender Pal Singh Chawla E-1320, Jahangeerpuri, Delhi-33	7212476
77.	SS021	Dr. (Mrs.) Sanno Bhardawaj Shiv Clinic, Arvind Nagar, 49/1 Ghonda, Delhi-53	
78.	SSZ22	Dr. Satinder Singh Nijhawan H-21, Karampura Moti Nagar, Delhi-15	
79.	SS023	Dr. Surender Kumar J-3rd Shop No. 5, Wazirpur J. J. Colony, Delhi-52	
80.	SS024	Dr. Seema Madaan 47C U & V Block Shalimar Bagh Delhi-52	
81.	SS025	Dr. (Mrs.) Sushma Chaufla Mother & Child Care P-35 Vijay Nagar Uttam Nagar New Delhi-59.	
82.	SS027	Dr. Sunil Garg A-154, Surya Nagar, Ghaziabad (U.P.)	863984 866182 P.P.
83.	SS028	Dr. Sumant Pasricha M-641, Mangolpuri, Delhi-83.	7272994
84.	SS042	Dr. Sudesh Purang Purang Clinic C-84, Panchaytee School Building Jhilmil Colony, Delhi-32.	2203205 P.P.
85.	SS051	Dr. (Mrs.) Susham Parbha Navjeevan Poly Clinic Main Bazar, Faridabad Old (Haryana)	276697
86.	SS059	Dr. (Mrs.) Sanjna Gulati C-1501, Jahangeerpuri, Delhi-33	7241359 7223395
87.	SS075	Dr. Satish Sangwan Hira Chowk Charkhi Dadri Distt. Bhiwani (Haryana)	

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
88.	SS060	Dr. Sudhir Kumar Sharma Family Clinic 81 Circular Road Shahdra, Delhi-32	2209525
89.	ST001	Dr. T. R. Goyal Y-427, Mangolpuri Ext. No. 1 Nangloi, Delhi-41	
90.	ST003	Dr. Tek Chand Goyal Raja Garden Gopi Colony Old Faridabad (Haryana)	8277596
91.	SU001	Dr. U. K. Chanda F/2-12, Sultanpuri, Delhi-41	5472851
92.	SU002	Dr. Umesh Kwatra F-37, Dakshinpuri Delhi-62	
93.	SV001	Dr. Vichitra Gupta 164, Haiderpur, Delhi-42	R. 7312228 C. 7233121
94.	SV002	Dr. Vijay Jindal A-1009 Jahangeerpuri, Delhi-33	7222558
95.	SV003	Dr. (Mrs) Veena Jindal A-1009, Jahangeerpuri Delhi-33	7222558
96,	SV004	Dr. (Mrs.) Veena Sharma D-561, Pandav Nagar New Delhi-8	R. 5508388 C. 5704896
97.	SV005	Dr, (Mrs.) Vijay Kwatra F-37, Dakshinpuri Delhi-62	
98.	SV014	Dr. V. K. Verma T-511/A-1, Baljeet Nagar, N. Delhi-8	
99.	SV023	Dr. Virender Sharma Village & P. O. Pochanpur (Near Palam) Delhi.	
100.		Dr. Anju Sharma J-66 Vishnu Garden, New Delhi-18.	

Scanned by CamScanner

S. No.	Code No.	Name & Address	Phone
101.	SA011	Dr. Akhilesh Sharma Holy Hospital Nalanda Chowk, Delhi-92	2211942
102.	SA018	Dr. Abdul Haseeb A. H. Medical Centre 27/25 Trilokpuri, Delhi-91	2252911
103.	SA021	Dr. Arvind Kumar Gupta 749/7 Govindpuri, New Delhi-19	R. 6416490 C. 6469875
104.	SF001	Dr. Faryad Ali Chaudhary 226-A Ext. Laxmi Nagar, Delhi-92	2248386
105.	SK005	Dr. Kuldeep Kumar Sharma 58 Guru Angad Nagar Ext. Laxmi Nagar, Delhi-92	2206831
106.	SK007	Dr. Kuldeep Singh Sohal A-59 Pandav Nagar, Delhi-92	R. 2246917 2245062 C-2241513
107.	SP012	Dr. P. Rama Krishan Bhat Vijay Clinic P. O. Kumbro (DK) via Aryapa Valangue Village Prthentqu Karnatka State	574258
108.	SR022	Dr. Rajeev Lochan E-476 Khajoori, Delhi-94	2293518
109.	SS027	Dr. Sunil Garg 140 Ist Floor Apsara Cinema Commercial Complex Shahdra U. P. Border Gbd. 201006	863984 866182 P.P.
110.	SH006	Dr. Harish Sood 1/165 Sadar Bazar, Delhi Cantt.	3293026
111.	SA030	Dr. Ashok Kumar Bajaj Ankur Clinic W. Z. 10 A Vishnu Park, New Delhi-18	5442642

Scanned by CamScanner

S. Nor	Code No.	Name & Address	Phone
112.		Y. L. Kalra 2F-26 NIT Faridabad-121001	
113.		N. K. Goyal 2089 Sec.16, Faridabad-121001	
114.		Bharti Sharma 72 Raja Garden New Delhi-15	
115.		Dr. Manju Sharma Sharma Health Clinic & Maternity Home Old Sabzi Mandi, Faridabad	
116.		Dr. Anita Bhargava 957 Sec. 16, Faridabad	
117.		Dr. C. S. Bhardwaj Sihi Gate Road, Ballabgarh Faridabad	
118.		Dr. Ani Ahuja Holy Family Clinic Main Bazar, Old Faridabad	276805
119.		Dr. Ashutosh Bhardwaj Haryana	
120.		Dr. Saroj Ahuja Haryana	
121.		Dr. Kiran Swami Haryana	
122.		Dr. Suman Nagpal Haryana	
123.		Dr. Suman Arya Haryana	

Scanned by CamScanner

with best compliments from:

SHARMA MEDICAL STORE

SIHI GATE

BALLABGARH-121004

With best compliments

from :

Subash Medical Store

MOHNA-ROAD

BALLABGARH-121004

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

ULTRASOUND CENTRE

DR. PRADEEP NEHRA

M. D. (Radio-diagnosis)

CONSULTANT ULTRASONOLOGIST

Formerly Ultrasonolgist :

SIR GANGA RAM HOSPITAL

New Delhi-110060

Resi. : 40, H-33, Sec. III,

Rohni, Delhi-110085

Phone : 7274971

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

डा. पंकज भाटिया ऑरथोपेडिक व मैटरनिटी सैन्टर

सैक्टर 7 ए, कोठी न. 56 सत्य पैलेस सिनेमा के पास

Facilities :

—X-Ray
—Fracture clinic 24 hours
—Physiotherapy (Short wave diathermy)
—Cervical & Lumbar traction
—Ultrasonic therapy
—Wax bath
—Rheumatic Pains
—Muscle stimulator
—TENS
—Abortion Services 24 hours
—Delivery
—Gynae Surgery

With best compliments from :

Nav Bharat X-Ray, E.C.G.

CLINIC & PATHOLOGICAL LAB

Baba Soor Dass Market Near Civil Hospital

Ballabgarh-121004

Phone : 41133

Scanned by CamScanner

With best compliments

from :

ULTRA SOUND CENTRE

Dr. Pravinder Singh

M.D. (Radio-diagnosis

Consultant Ultrasonologist (USA Trained)

Ex-Senior Consultant

(Head of Department)

Escorts Medical Centre, Faridabad

Clinic :

5R/1, B.K. Chowk,
Near Roxy,
Faridabad
(Haryana)
Phone : 8-216385
Timings : 10-00 A.M. to 1-00 P.M.

SUNDAY CLOSED

Resi-cum-Clinic

Flat No. 2 Mangla Apartments
'G' Block Kalkaji Near Main
P.O. & International Book Mart
New Delhi-110019
Phone :6438293
Timings : 5-00 P.M. to 8-00 P.M.

SUNDAY CLOSED

Scanned by CamScanner

With best compliments from :

SHARMA NURSING HOME

Daksha Road, Vishwas Nagar, Shahdara,
Delhi-110032 Ph. : 2202187

FACILITIES AVAILABLE

1. Medicine/Cardiology
2. Surgeory
3. Gynaecology and Obstetric
4. Paediatrics
5. Orthopaedic Surgeory
6. Anaesthesia

Well Equipped With :

X-Ray, E. C. G., Ultra Sound, Ambulance and Pathology Lab.

Medical Director

Dr. Dinesh Chander Sharma

B. Sc., B.A.M.S. M.D. (UNI)
P.G.C, R. (Bombay)

With best compliments

from :

JINDAL MEDICOS

Whole Sale Chemist & Druggist Stockists & Distributors

Astra Idl., Reckon Remedies, Charak, Arex (Fertye) Mount Mettur, Bharat Pharma, Makewell, Anandkar, Swad, Panjon, Inga Lab, Indian Herbes, Jama Biotech, Mercury, Segul, Planing India and Anil Pharma.

Chawla Colony, Ballabgarh-121004

Scanned by CamScanner

With best compliments

from :

A. P. Enterprises

20B/6B, Tilak Nagar, New Delhi-18

Deals in Ayurvedic Medicine :

Main Distributer, Delhi

GOLDEN LABORATRIES

Please use :

- **Sy Netolive (Liver Tonic)**
- **Sy Negesto (Carminative Mixture)**
- **Sy Netocough (Cough Syrup)**
- **Sy Golden Raktasafa (Blood Purify)**
- **Sy Golden Cough Expectorent (Cough Expectorent)**
- **Sy U. T-11 (Alkalizer)**
- **Sy D-Syntrox (for Dycentroy)**
- **Sy G-80 (A Best Health Nervine tonic)**

Mfg. in India By :

GL **Golden Laboratries**

K. N. 299, Mukhmel Pur
Delhi-36

Scanned by CamScanner

चुटकले

मालिक—अपने नौकर से कहता है कि तुमने तीन पत्र डालने में तीन घंटे लगा दिए।

नौकर — मैं घूमते-घूमते परेशान हो गया, लेकिन जहां भी जाता वहीं लेटर बाक्स में ताला लगा मिलता।

अध्यापक—छात्र से बोलता है कि मैं असंभव को संभव नहीं बना सकता।

छात्र—सर मैं बना सकता हूँ।

अध्यापक—कैसे।

छात्र—सर अ को हटाकर।

मरीज डाक्टर से—डाक्टर जरा ध्यान से देखना क्योंकि उस डाक्टर ने इलाज मलेरिया का किया और मरीज टाइफाइड से मर गया :

डाक्टर मरीज से—घबराइये नहीं यहां टाइफाइड का मरीज टाइफाइड से मरता है।

अध्यापक—छात्रों से कहता है, जो मेरी उम्र बताएगा मैं उसको कक्षा का मानिटर बना दूँगा और पैसे दूँगा।

छात्र—कोई कहता 60, कोई कहता है 70, कोई कहता है 50, फिर आता हैं रामू का नम्बर वह कहता है मास्टर जी 40 वर्ष, मास्टरजी कहते हैं बिलकुल ठीक।

अध्यापक—कहते हैं तुम्हें कैसे मालूम।

छात्र—कहता है मास्टरजी मेरे भाई की उम्र 20 वर्ष है वो आधा तूतिया आपकी उम्र 40 वर्ष आप पूरे तूतिया।

—दुष्यन्त चौहान

Scanned by CamScanner

with best compliments from :

Phone : 2217722 (PP)

Dr. ASHOK GUPTA

M. B. B. S., M. D.

(Skin & V.D. Specialist)

FORMERLY AT

P. N. BEHL SKIN INSTITUTE NEW DELHI
UCMS/GTB HOSPITAL, SHAHDARA

SKIN CARE CLINIC

F-2/19, Krishan Nagar, Delhi
10 A. M. To 1 P. M.
6.30 P. M. To 9 P.M. } Daily
Sunday Evening Closed

YADAV NURSING HOME

182, Guru Ram Dass Nagar
Laxmi Nagar, Delhi
Tue-Sat-8 A. M, To 10 A. M.

FACILITIES AVAILABLE

Treatment of Skin & V.D. Allergy Testing, Electro Surgical Procedures, Electrolysis, Plastic & Cosmetic Skin Surgery, Mole Excision, Scar Repair, Surgery for Leukoderma, Hair Transplantation.

With best compliments

from :

K. B. Nursing Home

SHOP. NO. 29, MAIN MARKET,

SECTOR-7, FARIDABAD

Dr. K. B. GUPTA
M. S. (Ortho)

Dr. (Mrs.) KANTA GUPTA
M. D. (Paed)

Scanned by CamScanner

FELICITATIONS FROM

SIRIS

"SERVING THE AILING MILLONS FOR FOUR DECADES"

THROUGH

"HIGH QUALITY FORMULATIONS"

—VITAPEPSIN - Syrup, Capsule, Drops
—ULSEDIN Tablet
—GYNOSEDAN Elixir
—SIRICONDIN Syrup
—HISTACORT Tab/Inj.
—TONIC STAMENA
—BACTOSTAB - D. S.
—COMPINEURON Inj.
—DEFLAM Tablet
—RUMATISONE Tablet
—DEXIRON Syrup

For details contact :

SIRIS LIMITED

L. B. NAGAR

HYDERABAD - 500 963

With best compliments

from :

M/s. Ambica Pharmaceuticals Pvt. Ltd.

37/1 Gali Mandir Wali Maujpur, Delhi-110053

Mfg. of Patent Ayurvedic Medicines in Capsules

☐ AMBITONE—G ☐ AMCOSIL ☐ DIARRHOSIL LIVON—T

☐ AMPLEX ☐ INDOZYME FORTE

Scanned by CamScanner

With best compliments

from :

Dr. Ramesh Nursing Home

Mohna Road, Ballabgarh

Facilities :

ALL TYPE OF OPERATIONS, INDOOR SERVICS

(Emergency 24 Hours)

MENDIRATTA X-Ray Clinic

X-Ray, Plain X-Ray, Barinum Meal Etc.

Laboratory—All type of investigations with latest computarised Equipments

Special Facility for Ultrasound

also Physiotherapy and Ortho Centre

With best compliments

from :

PARASHAR AGENCIES

Deals In :

General & Ayurvedic Products

Distributors for Trans Yamuna Area

Vedant Remidies Shivalik Pharmacy

Stockists for :

DABUR, JHANDU, BAIDYA NATH & CHARAK

Bhagwati Bal Vidya Mandir, Jagjit Nagar IIIrd Pusta

Delhi-110053

Phone : 2281023

Scanned by CamScanner

शुभ कामनाओं सहित :

डॉ. डी. डी. सेमवाल

FOR RELIABLE INVESTIGATIONS

KANCHAN X-RAY & NURSING HOME DELHI 110041

KANCHAN

X-RAY & NURSING HOME

रंगीन एक्स-रे तथा खून, मल-मूत्र, गर्भ जांच आदि एवं माता के टीके व पोलियो की दवा के लिए सम्पर्क करें:
Ph. : 5471884

कंचन

एक्स-रे एण्ड नर्सिंग होम
वाई-47 सुल्तानपुरी रोड,
नांगलोई, दिल्ली-41.

नांगलोई क्षेत्र में सबसे बड़ी एक्स-रे की आधुनिक मशीन तथा उपकरणों सहित
चिकित्सा सेवा में 1978 से कार्यरत
क्या आप उच्च कोटि के एक्स-रे तथा
अन्य जांच करवाना चाहते हैं ?
कृपया एक बार सेवा का अवसर दें :

KANCHAN X-RAY & NURSING HOME

Dir. Dr. D. D. SEMWAL

B. Sc. (Pre) B. A. M. S. D. A. D. MRSH
(London) MD (Acup)

Regd. No, 8/12294/II,
A Govt. of India

Phones : Res. 5471630
Off. 5471884
5471025

Y-47, Sultanpuri Road, Nangloi, New Delhi-41

Printed at : Chauhan Art Press, Karol Bagh, New Delhi-110005

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From:

COLDOF

RIVARD
TONIC

PECORIM-DS
CO-TRIMOXOLE

PECOF
COUGH DIP

PALACID
ANTACID

BUTAFEN
ANTI INFLAMATORY
ANALGESIC

PEOPLES' ECONOMY
(MARKETING) PVT. LTD.
CHHATTARPUR, NEW DELHI-30. (INDIA)

Scanned by CamScanner